

जगज्ज्योतिर्मल्ल कुत—

हरगौरीविवाह^१ नाटक

..... 'नं जगति कर्णं दत्तावतीर्णं' ॥

श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराज एहने महोवार चरिय आओर कम्म कत कह्य ॥

नटी, धन्य धन्य महाराज, एहना कुल एहने उचित, किछु नगर वर्णना भोजो कहइ छजो ॥

सूत्र, अविलंबे^२ कह ॥

॥ नगरवर्णना, नट्युक्ति । गीत ॥ मालव ॥ चो ॥

बन्दनेवार घएल ठाम ठाम, नगए नगर एहे गुण अभिराम ॥
वेव मज्जल धुनि अहमिस होह, दिनकर किरण वरव वओने गोइ ॥
घरम करम सबका थिर नीति, ते^३ पले काहुक होख न भीति ॥
बिसुवन जननी करवि निवास, अचिरेहि वेवि सबक अभिलास ॥
नगइ यथमणि हे जगदम्भे, नृपजगज्ज्योति मल पुर अविलम्बे ॥

॥ गीतार्थ आन ।^४ यति ॥

सूत्र, हे प्रिये भल कहउछ, परन्तु एहना उरसव, कओन नृप उचित बिक ॥

नटी, हे नाथ, तबी अपेनेहि विज ॥

सूत्र, हे प्रिये, श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराज शिवभक्तिपरायण तद्धिका सिवाश्रित जे, कवा तबीहि उल्लास, ते हमराहु हरगौरीविवाह नामे जे नाटक महाराजादिक कएल से नाथ ॥

१. पद्यार्थ पृष्ठ संख्या-१; ऐकसप्तोत्तर-१३क । मूल हस्तलेखमे आरम्भक कमसे कम एक गोट पत्रगुप्त नहि अछि ते^३ नाम्बोरीलोक, नाम्बोरीत, सूत्रधार-नटीक यातालापक कियवंश आ जगज्ज्योतिर्मल्लक प्रशस्ति श्लोक नहि भेटैछ । प्रशस्तिश्लोकक अन्तिम चरणांशसे नाटक उपलब्ध अछि ।
एतद्विसे^४ पद्यार्थ पृष्ठक गणना आरम्भ भेल ।

२. पद्यार्थ पृष्ठ संख्या—२; ऐकसप्तोत्तर—१३ छ ।

नदी, एहने उचित ॥

सूय, स्वराजो हमरा बुद्ध अति मेता महादेव काछए जाऊ, चलह ॥
सूयनिससारणीत ॥ नाट ॥ परिमान ॥
उछाह सोहाओन हरक धरीत,
ताहि विनेवे विवाह चिहीत ॥
कोणभाषा ॥

सूय हे प्रिये महादेव चरित्र सहजहि सुन्दर, विनेव गौरीविवाह ॥
नदी, हमराहु वड, तथीउा'ल्लास् मेता उक्तिप्रवृत्ति अति विचित्र ॥
द्वितीय कोणे ॥

नदी, एहना उत्सव विलम्ब जगु कह, ॥

सूय, अवस्थ ॥

इति प्रथमः सम्बन्धः ॥

॥ ततो नन्दिमूर्ति सहितो महादेवः प्रविशति ॥
कामोद ॥ प्र ॥

डिमिकि डिमिकि करे डमरु वजावए,
बसह चढल वूड धीरे धीरे आवए ॥
तपस्विना कत (कत) भेष बना(व)ए,
सास नोरि बुद्ध विदुसि हठावए ॥ ध्रुव ॥
खने कर जप तप खने कत बेसी,
नरले डरकि पड ओहे परदेसी ॥
रहयि भूत तगे असधि मसान,
जुगे जुगे जोशिया धरयि घेथान ॥
प्रणवि प्रणवि एहु गाथे कुणराए,
अदबुद धिक हे परमपद पाए ॥

(महा) हे नन्दी हे भृङ्गी

॥ श्लोकः ॥ गढे कडोर चित्तोई, मत्त क'रण कोमलः ॥
अतो भवन्तो मत्तो न, स्ववतु क्षममणि क्षमा ॥

१. य० पु० सं०—३; एवम्—१४ क ।

२. य० पु० सं०—४; एवम्—१४ ख ।

सत्तौ

जगज्ज्योतिर्मल कुल

नन्दिमूर्तिणी हे प्रभो ईश्वर भक्तवत्सले हो ॥

इत्युक्त्वा नन्दिमूर्तिणी गायतः ॥

कोराब ॥ ए ॥

धवल बसह पर धडल महेश, भसम धवल तनु देखि सुवेश ॥
हाडमाल धवल धवल सङ्गमाल, धवल कपाल कर शशधर भाल ॥
शिरहु धवल रह सुरसरि धार, धवल वएल शिर धुधुर मन्दार ॥
शिवक चरण रवि कोटि [सम] धाम, नृपजगज्ज्योति कर तमु परणाम ॥
महादेवा, हे नन्दी हे भृङ्गी, वहिआ सज्यो सती देहस्थान कएल
तहिआ सज्यो, मोज्यो विधोग व्याकुल रह्यो, अतएव
सती हिमालयक गृह अवतार लेलछ, हे चरहु तसए
जाऊ ॥]

३उभो, देवाविदेव के आज्ञा ॥

॥ महादेवनिस्सारणीत ॥

आज्ञाधरी ॥ खर्ज ॥

सती दिओने धेरज नहि भेल,
हिमगिरि भवन जनम लल्लि लेल ॥

॥ कोणभाषा ॥

महा, हे नन्दी, सती मोरा अछ'धरी ॥

नन्दी, हे प्रभु, एहुने ॥

द्वितीय कोणे ॥

नन्दी, हे भृङ्गी, ईश्वरक कार्य स्वराए कह ॥

भृङ्गी, हमरा आन कजोन कार्य ॥

इति द्वितीयः सम्बन्धः

आज्ञाधरी रागेण महादेवप्रविशति ॥

कोणभाषा

महा, हे नन्दि हिमालय सन्निधान अएलाहु ॥

नन्दी, हे देवाविदेव अति रम्य स्थान ॥ (द्विको ॥)

नन्दी, हे प्रभो, ई'ध्यायम सन देखि छी ॥

महा, हिमालय अनेक ऋषि तपस्वा करैछ ॥ (द्विको ॥)

१. रागभजन संग्रह गीत—९, पाठांतर नहि ।

२. य० पु० सं०—५; एवम्—१५ क ।

हरगौरीविवाह नाटक

तैतिस्

महा, बड मनोरम स्थान छत एक जोहा वै । १ गू ॥
नन्दी, जे आजा ॥

॥ मालव राजेण ऋषिराधरं [वासु सहितः] प्रविशति ॥

॥ कोणभाषा ॥

आज आक धुधुर अनेक भेटल मालव्यादि नहि भेटलें, ई आखसखे वड
[वासु, जे पावल, से उत्तम] ॥ द्विको ॥

(ऋषि,) आज मोरा दक्षिण चहुः स्थल होइछ, ते अपूर्व दर्शन होमाओ
पार ॥

[वासु, बहुत नीक]

॥ ऋषीश्वरं पश्यति ॥

हे देवेश मोर दलाऊ प्रणाम, धन्य मोर भाग्य, आज हमरा तपस्या
साफल्य, जे ईश्वरस बरणादिसि देखल ॥

(महा,) [हे ऋषि कुशलमस्तु]

(ऋषि,) हे परमेश्वर जोहाक गुणानुवाद करै छको अवधान कइ ॥

[महा, जोहाइ विश ॥]

॥ ऋष्युक्त गीतं ॥ मालव ॥ धृ ॥

घर नहि संवर पहिरि वसंबर,

त्रिभुवनपति तोहे देवा, मोरि सेवा लो ॥

कओगे पुने अपुनस रूप तपसी,

वड रसी ॥ ध्रुव ॥

भक्तम धर्म दए ममान वास । १ कए

पर के बिए सुख ठामे, अमिरामे, लो ॥

बीर धरिए गीत, नारि आध आंग,

करिए ध्यात समाधी, जोगनिधी, लो ॥

नृपजगजोति मति, शिवक चरण गति,

अवसर बिसरहु जनु, मोहि पुनु, लो ॥ १

१. य० पु० सं० ६; एकस०—१५ ख ।

२. य० पु० सं० ७; एकस०—१६ क ।

३. गीत पंचाशिका, गीत-८ ॥ पुनर्हर स्तुति नचारी ॥ श्री ॥ चो ॥

चौतिस

जगज्ज्योतिर्मल प्र०

महा, कहे साधु साधु ॥

[वासु, हे पुताय, हमहु किछु कहै छी ॥

॥ वासुकि गीतं ॥ मिदु ॥ यो ॥

बाए मिथल हमे ॥

सबैं हसति ॥

ऋषि, हे सुभाषल

जमाज गुण, कुतुम्भक रङ्ग बोर दिने नहि जाए,

सहजे गुण, नुमाक रङ्ग कबहु नहि जाए,] ॥

(महा), जोहाओ नन्दिभृङ्ग सहित एतए रह मोरो हिमालयक दर्शन
कए अबै छओ ॥

ऋषि, जोहाक अधीन प्रीलोवय ॥

॥ महादेवनिस्सारगीतं ॥ वनाश्री ॥ ख ॥

शीतल सौरभे हिमगिरि तोरे,

ततहि जाएव हमे भौरिक लोभे ॥

कोणभाषा ॥

गोरी कति बडि भेलि छलि बहु ॥

द्विको ॥

आज सहजहि देखनि ह (महु) ॥

[ऋषि, हे नन्दिभृङ्ग खन एक हमरा आखम विधाम कइ
सन्धी, सख्यवा ॥]

॥ ऋषिनन्दिभृङ्गिणी जमनीपट्ट दत्ता निस्सारगीत ॥

इति तृतीयः सम्बन्धः ॥

॥ अथ गोरी ॥ १ सतिती नेनहिमालयो प्रविशतः ॥

गङ्गल गीतं ॥ कोशि ॥ ए ॥

हरलित गिरिराजे देल परवेश, मोरि सेना दुहु मणे परम सुवेश ॥

रूप गुणे समभुत देखिअ कुमारि, जुवति तबहु पर सेहे वरनारि ॥

विविध रत्नने तनु पसरलि कति, कहि मधुर बोल कत कत भति ॥

नृपजगजोति कहै न कर कलेष, गुज अमिमल जत पुरत महेश ॥

१. 'रहि' सेहो पढ़ल जा सकैछ ।

२. य० पु० सं०—म; एकस०—१६ ख ।

हरगोरीविवाह ताटक

चैतिस

हिमा, हे प्रिये हमर महिमा किछु सुनु ॥

श्लोकः ॥ हिमालयोर्हि विश्वात्, ध्वजंता' नामधोद्वरः ।
मदबध्दभमनासाय, पृथ्वी भवति विश्वला ॥

मेना, हे प्रभु, ई, एहने, हमरो किछु गोचर सुनु ॥

श्लोकः ॥ एषी विलोचना मेना, रूप शील समन्विता ।
त्वत्पाव गुणमलाम्भोजे, शिरसाधारयाम्भुहं ॥

[गौरी हे तातः, हे मातः, किछु विजप्ति हमरो ॥

उमो, हे प्राणप्रिये पुत्रि, कहू कहू ॥

श्लोकः ॥

(गौरी) गिरिराज पिशस्तव पादयुगं हृदि निश्चित शोण सरोज बलं ।
परमं च तवापि च भक्ति बद्धा, मन्मता कलये वसुधा बलये ॥

उमो, साधु साधु ॥

हिमा, हे प्रिये जेहाक नील जेहन श्री(क), परगु, कजोन कजोनओ
गौरीक चरित्र देखि परम आनन्द होईछ ॥

मेना, हे नाथ बालचरित्र अद्भुत ॥

॥ ततो योगिवेशो महादेवो गौतेन प्रविशति ॥

मालव ॥ ए ॥

पुलकित तनु मार रे रे तनु गुण सुमरि सुमरि अभिरामे,
हृदय पुडाओन रे रे छिति मरि देखव वदन हिमधामे ॥

कोणभाषा ॥

कजोन व्याज कए गौरी हुने देखविह ॥ छिको ॥

हम ए देवे के चिन्तत ॥

॥ मेना महावेशो परस्परमवलोकयतः ॥

महा, हे मा [ता], जेहाक कथा कहिन छथि ॥

मेना, हे प्रभु, एहि मिलारीक उक्ति सुनै छी ॥

१. विश्वातः पर्वता' उचित होयत ।

२. य० पु० सं०—१; एवम—१७क ।

छत्तिस

जगज्ज्योतिर्मल कुत

॥ मेनाक्ति गीत ॥ कोराव ॥ चो ॥]

'परवह पुछ मोहि बावलि भवानी, कतिएक भेलि अछि देखए वेह आना ॥

भीखि वेआवे वास मोर जावे, मनमोहन जोगिया भल गावे ॥ ध्रुव ॥

ए माइ हे मोहि अजगुल जागु, सुतलि गौरि जोगिया देखि जागु ॥

जाहि जोगिया देखि दुरहि पराई, ताहि जोगिया कोर गोरि बेली ॥

मनइ विद्यापति मदायिनि सुनु, ओ जागिया वर होएत पुनु पुनु ॥

हे गिरिराज, जओरो कौतुक देखई छी, ओ जोगिया हमरि
कुमारि देखि हसैछ ॥

[हिमा, जोगी कौतुका]

॥ मेनाक्ति गीत ॥ असावरा ॥ चो ॥

वेसहो मे माइ हे जोगि रङ्गरतिवा,

गोरि मुख हेरि हेरि हसए विहुसिया ॥

विभूति भूषण गिम कणिमणि शोभे, राजकुमारि कल जावए लोभे ॥

अधिर सशस्त्र करे डमर धजावे, चञ्चल लोचन मनमथ भावे ॥

पुतपुत आवए हटल न माने, कवने परि बोलव बचन निदावे ॥

मनइ तवागन्द करह उछाहे, बड समुझित गोरि संकर माहे ॥

हे जोगी तोहर ई कजोन भाति, हाडमाल साव टाड जडाजूट भस्मभूट ॥

शूल हाथ डमर बजाए की नैनी छह, इ अन्न भिक्षा लेह ॥

॥ महावेशो मिश्रात्यक्त्वा सोरडिरागेण निस्सरति ॥

कोणभाषा ॥

हुने कट्याश्रम जाएव ॥ छिको ॥ एतए कइवि पठओवाह ।

मेना, हे गिरिराज बड आश्चर्य, जोगी भिक्षा त्यजि गेलाह ॥

हिमा, जोगी मङ्गी रङ्गी त[कर] मन के जानू कुमारी योग्य भेलि, एक

शिखर भए भिक्षाहक चिन्ता । १ कल गए ॥

१. य० पु० सं०—१०; एवम—१७ख ।

२. य० पु० सं०—११; एवम—१८क ।

३. य० पु० सं०—१२; एवम—१८ख ।

हरगौरीविवाह नाटक

सैंतिस

[मेना, प्राणेश्वर, हमे रस्ती जातिके पुरुष आशा मानिअ, ए
बमं चल्] ॥

॥ मेनाहिमालयी गतिन निस्सरतः ॥

चोरठि ॥ छ ॥

मन्त्रध्वे गान कर गगन बुंदुधि वाज, वेध नारि सवे ताचे,
रुधे पुने आभरि विभुवन नागरि, के नहि मोरि मोरि साये ॥

॥ कोणभाषा ॥

हिमा, हे प्रिये हमर घर सभ्य संपूर्ण विवाह जल लाइव सेहे साथक ॥
मेना, ओहा हितम ॥ त्रिको ॥

मेना, इन्द्रादि देवगण मंगेछ कम्पा ॥

हिमा, ओहे शिखर गए विचार ॥

इति चतुर्थः सप्तमः ॥

॥ जमनीपट्ट दत्ता नन्दिभूक्ति सहिता ऋषिः प्रविशति ॥
ऋषि, हे नन्दीश्वर, ईश्वर सजो दर्शन पुनु होएत की नही ॥

[बमो, ऋषीश्वर अवश्य होएत] ॥

॥ महादेवो मालव रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

स्वरूप जाएव ॥ त्रिको ॥ आहाहा कहैत ॥ गोरीक रूप ॥

॥ महादेवो नन्दिभूक्तिरूपी पश्यति ॥ सर्वमहादेववरणे पश्यति ॥

ऋषि, हे नाथ, अपने बड़ सानन्द स्वरूप देखइ छिअ ॥

महा, हे ऋषिराज बिस्तार कत कहव, ओहाओ हिमालय पाहि कम्पा मानि
विश्रमो, हमे विवाह करव ॥

ऋषि, मोर बड़ भाग्य मोजो जाई छजो ॥

१. य० पृ० सं०—१२; एवम०—१९क।

२. 'छिअह' लोखि 'ह' केर भाष पर तीन मोट ठाड रेखा देल छेक। ई 'ह' के
कटबाक संकेत जखे छ।

अंततिथ

॥ ऋषिगीर्देन निस्सरति ॥

गोपीबल्लभ ॥ प्र ॥

हरक चरित विविध पवित्र बरह चडल गिरि आवे।
हमहु जाएव निरिराजक सन्निधि ते सुरमण मुख पावे ॥

कोणभाषा ॥

घन्य मोर भाग्य ईश्वरे मोरा के आशा कएल ॥ त्रिको ॥
हिमालयहुक घन्य भाग्य जहिका ठामे महादेव पाऊना करै छयि ॥

[महा, ऋषि हमे ओतए पठओलाह एहि मनोहर, ऋषि आश्रम
खनेक रइव]

बमो, देवादेश प्रमाण ॥

॥ जमनीपट्ट दत्ता महादेवो निस्सरति ॥

इति पञ्चमः सप्तमः ॥

॥ गोरी सहिको मेनाहिमालयी मालव रागेण प्रविशति ॥

॥ कोण भाषा ॥

हिमा, हे प्रिये एहि शिखर कहैत कहैत पुन्य सवे ॥

मेना, हे प्रमो आभोदे प्रमोव होइछ ॥ त्रिको ॥

मेना, हे प्रभु जनेक अनेक रङ्ग फल सबे देखई छी ॥

हिमा, तेहि एखए अएलाहु ॥

हिमा, एहना रम्य स्थल छण एक विश्राम कर ॥

मेना, हे प्रभु जोम ॥

॥ ऋषिः पृथ्विया रागेण प्रविशति ॥

कोणभाषा ॥

हिमालयक बड़ भाग्य ॥ त्रिको ॥ हिमालय पर विवाहाक, बड़ छुपा ॥

॥ हिमालय ऋषि दुष्टका प्रणमति ॥

हमरा कम्पाविवाहक समय ओहाओ अएलाह बड़ भाग्य ॥

१. य० पृ० सं०—१४; एवम०—१९ख।

२. एतह छूट चिल्ल वऽ ऊपरमे एकटा अक्षर छेकजे दुष्पाठय छेक।

हरगोरीविवाह नाटक

अनन्तालिख

अमरकान्तिक

कवि, हे गिरिराज ओहाक । 'बड भाग्य' ते हमें अएलाहु, परन्तु ओहाओ
वर केओ बिचारलछ की नही ॥

हिमा, अनेक देवता मगई छवि, ते व्यक्त नही कएल छए ॥

कवि, चतुर्दश भुवनक सृष्टि स्थिति प्रलय कर्ता देवाविदेव महादेव ओहाक
कन्या मंगई छवि ते हमें अएलाहु ॥

हिमालयो विस्मयतस्त्वृणी विष्टति ॥

मेना, हे कवीश्वर, एहन कहिनी ओहाए बाजल छी, ओ मरान-
वास भङ्ग वास, वृषयान विषयान, हाडमाल बावछाल,
भूत सङ्ग प्रेतरङ्ग, कर कपाल चाल हार, जडाकू(जू)ड
विकट रूप, धुलि घूसर ताममात्र ईश्वर, एहना के कन्या के
देव, कज्जने सावेबा(वि?) ओ, विशाह करए अओताहु,
किछु मुनु ॥

॥ नेनेविड गीत ॥ पह १३विवा ॥ टुटापरि ॥

कैसे आओत विशाहक साज, नापट समत तल्लि न लाज ॥

गजक चरम बावक छाल, ओडिए धरिए कर कपाल ॥

भक्षम धवल सगर देह, गिरिमुखा कैसे करति नेह ॥

नृपजगजोति एहेन भाग, सिव छाड़ि तिनि लोक न आन ॥१॥

[गीतार्थ आवयति]

कविशकण्ठ हस्ती दत्ता रोमाञ्जसमिनीय

[स्त्री जाति विविध भाति, नीच गति, चपल मति, पाप पुर,
धर्म दूर, बहुत वाज, किछु न लाज, रह न ओर, जनि समीर,
अधिक शास्त्र न गान आस, नायिक बुद्धि, मन अशुद्धि, परम मूढ़,
हृदय मूढ़, काकपेष्ट, काममुष्ट, बोल तुहर, कर्म जहर, वासा
नाम कपट घाम, काम कोह, लोभ मोह, इत्यादि संयुक्ति तोहे (?)

१. य० पृ० सं०—१५; एवम—२०क।

२. य० पृ० सं०—१६; एवम—२०ख।

३. नानारागगीत संग्रह, गीत—१५। पाठान्तर—आवत, नागत।

४. 'ति' पंक्ति उपरमे लिखल अछि।

चालिस

जगज्जोतिर्मल्ल कुल

[हे महाइनि, त्रैलोक्यनाथ महादेव के एहन बड़ी छह, शिव शिव शिव ॥] हे
मेना तोहे स्त्री जाति, महादेवक स्वरूप का भागह, मुनह ॥

कव्युक्ति गीत ॥ १३विवा ॥ ए ॥

गज बाघ चरम सोभए अत अङ्ग, नसम धवल कएल जाति अनङ्ग ॥

नापट समत के जानत भव, जल्लिक सल्लन नहि बुझए वेद ॥

हुनि भल बिहू गिरिराज कुमारी, जल्लिकाइ भेलि जुगे जुगे सपधारी ॥

नृपजगजोति बुझायए भाव, तबहि काल सिव वरण सोहाव ॥२॥

[गीतार्थ आवयति ॥]

हे मेना अओरो मुनह ॥

॥ कव्युक्तिगीत ॥ कैदारा ॥ प्र ॥

अपना सुतके सवे कह नीक, गुणि जन बुझए जन अधीक ॥

मुमुषि बुझाओव किछु न कलेस, अवधिक मन हो हरि उपदेश ॥

स्वगुण प्रकाश कहैत नहि लाज, तकरा कहला कोदहु फाज ॥

प्रसव वेदन गुरुविनि पए जान, बांझ न वृत्त तकर अनुमान ॥

नृपजगजोति कह मेदिनि घोर, धुननिहार एक नन्दकिसोर ॥

तोहर परम भाग्य महादेव तोहर अर्षी होइ छवि ॥

[मेना, हे नाव, के जोनिमिष कए, अएलाह, सेहे नहि महादेव ॥

हिमा, हे मुन्दरी ओ अनादि प्रलयस्वरूप, हुतका के एहन नव(र)जिअ, विशाह
तखम कर ॥ ४॥

हिमा, हे कवीश्वर ओहाओ सर्वश के ओहाक इच्छा ॥

कवि, हे गिरिराज, मोनो महादेव लेआए अनइ छत्रो ॥

१. य० पृ० सं०—१७; एवम—२१क।

२. नानारागगीत संग्रह, गीत—१६। भक्तिरस नचारी गीत। पाठान्तर—
बुझर, जुगे जुगे।

३. मूलमे 'आवयति' अछि।

४. ई अंश पत्रक नीचमे लोखि अन्तमे पंक्ति संख्या बेत गेल छेक।
परन्तु पत्रक तत्संयक मूल पंक्ति में छूट चित्त नहि देल अछि।

हरगोरीबिबाहु नाटक

एकतालिख

कृषिः ॥ केयारा ॥ रागेण निस्सरति ॥

कोणभावा ॥

ईश्वर कृपाए हमरा कार्यसिद्धि भेल ॥ द्विको ॥ ईश्वर कार्यसिद्धि होएत
ई कजोन भित्त ॥

[हिमा, हे प्रिये विवाह कार्य स्वराए कठ

मेना, हे प्रभु करव]

मेना हिमाकसो जमनीपट्ट वत्ता निस्सरति ॥

इति पठः सम्बन्धः ॥

॥ ततो जमनीपट्ट वत्ता महादेवप्रविशत ॥

महा, हे नन्दीश्वर कृषि का किए बिलम्ब भेल ॥

नन्दी, मोचो द्वार भए वाट हेरए छजो ॥

॥ तत कृषि बामु, गीतेन(न) प्रविशतः ॥

॥ मालव ॥ चो ॥

तखर पात सरिण सरि बुर गेल, पुनु नख पल्लवे भेल

सतो बिजोम हरहि हिय हारण, होएत दुहु अवे मेल ॥

सकल मन सानद रे परिहरि जल किछु दद ॥

वसहु दिश ॥

॥ कोणभावा ॥

(कृषि) त्वराए आएव ॥ द्विको ॥ महादेवक चरम बम्बना करव गए ॥

नन्दी, कृषिदृष्ट्वा वदति ॥

हे कृषीश्वर ओहादिक पथ हेरइते छलाहु स्वराए भीतर चल ॥
कृषि, जे आशा ॥

१. य० पृ० सं०—१८; एषस-२१ ख ।

२. 'मेना' शब्द एहठाम छूटल छैक तँ छूट चिह्न वऽ कऽ ओहते ऊपरमे लखल छैक ।

३. नीत अपूर्व अस्ति ।

वैशालिस

जगज्ज्योतिर्मल्ल कृत

॥ कृषिर्महादेवं दृष्ट्वा कुलाञ्जलिः स्तोति ॥

॥ श्लोकः ॥ अस्वमेध सहस्राणि, वाजपेय सत्तानि च ।

महेशान्नं पुण्यस्य, कला गार्हन्ति शोचसी ॥

[श्रीश्रीजगज्ज्योतिर्मल्ल महाराजनयन, शशिवेपरसिद्ध कएल, जेहाफ मक्ति
गीत एक पर्व छी ॥]

॥ धन ॥ चो ॥

तोहर कृपाए रह दध विकपाळ, मोचो कि कहव हर तोहहि कृपाळ ॥

हर विनति हमार चरण तोहार ॥ ध्रु ॥

सहिमा तोहर कहव कजोने मती, जन्मे जन्मे शिव तोहे पए मती ॥

अलपहु भगति होअहु परसने, आक धुबुर कुले पुन सवे जने ॥

सोर मंदानि सतधर नाल, बाध चरम ओड़ भूपण क्याळ ॥

सिद्धि निधि दाता जगल किसान, शशिवेपर केवरि एही भान ॥]

महा, हे कृषीश्वर, कजोने वार्ता ॥

कृषि, अधिलम्ब प्रयाण कर ॥

॥ सर्वे मिलित्वा गीतेन निस्सरन्ति ॥

महाराी ॥ प्र ॥

वसहु घब्राओल समीरण जीन,

पाव वदन हर लोषन तीति ॥

कोणभावा ॥

महा, हे कृषीश्वर, एहने वेने जओरो किछु नलु ॥

कृषि, जे भावा

॥ द्विको ॥

कृषि, हे नाव एहा सजो, ओहो विवाह मण्डप देखइ छी ॥

महा, मधुरहासेन कृषि बिलोकयति ॥

इति सप्तमः सम्बन्धः

१. य० पृ० सं०—१९; एषस—२२ क ।

हरगौरीविवाह नाटक

वैशालिस

॥ सगरबाहो हिमालयो जमनीपट्ट दत्ता प्रविवति ॥

हिमा, हे मेना, विवाहक लग्न निकट आएल, ईश्वर नहि अ'एलाह ॥

मेना, जोहाजो जोहने वर जोहल ॥

[मेना, हे दायिलोके गोरीक पसाहनि कल ॥

विधि, मैजो जोहे करे छी, गोरीमुखिय,
ए वेदिया एलए आज, पसाहनि करव ॥

गोरी, अएलाहु ॥]

आसाबरी रागेण महादेवप्रविवति ॥

कोणनाया ॥

महा, हे ऋषीवर बड रम्य स्थान ॥

ऋषि, गोरीक गुने ॥ द्विती ॥

[ऋषि, हे ईश्वर, विलम्बि कल ॥

महा, ऋषि उत्तम कहर ॥]

हिमा, प्रिये, कुसुम वृष्टि होइल, स्वर्ग अनेक बुन्दुभि वाज वजइछ
मोरे जाने महादेव अएलाह, मोखे आगु गए लेजाए अनबाई ॥

हिमालयो गत्वा महादेव राजोपचारैस्संपूज्य गृहमानवति ॥

हिमा, हे ईश्वर बड भाग्य मोर, जोहाक चरण फगल देगल (मोखो
राजोपचार पूजा करे छजो ॥)

॥ महादेवः सलज्जमधोगुहस्तिष्ठति ॥

[हिमा, हे ऋषि पुज्जव, ईश्वर सहिते, विवाह मण्डप विजय कल ॥
वागु, अष्टाष्टहायेन हसति ॥

तत्र गण्डये ॥]

हिमा, लग्न निकट आएल विलम्ब जनु करिअ ॥

ऋषि, हे गिरिराज, विलम्बक अवसर नही ॥

१. य० पृ० सं०—२०; एवम्—२२ ख ।

गोवालिम

जगन्मोतिमल्ल कल

हिमा, हे ऋषीवर सभे सामग्री उपनिअ अछि ॥ १ ॥

ततः कङ्कण ध्वनं ॥

ऋषि, हे ईश्वर, पहिले पाद प्रक्षालन कल ॥

महा, अवश्य ॥

ऋषि, हे गिरिराज, ऊधरि, मूतर, साठी घान, पिअर सुत, आसक पात
आनि दि(अ) ॥

[[१ माय बनाभी ॥ चो ॥

अथ जय मल २ ॥ ध्रुवं ॥

पिअर सुत वेडव नव जना, ए विधि सोहवि विवाह रचना ॥

हर कर कंकण प्रथमहि फेर, विहुति विहुसि मुनि मुख सने हेर ॥

हर कर कंकण दोसर फेर, बाठहु जना बाठ दिस घेर ॥

हर कर कंकण तेसर फेर, देखितहि सब (मन) दुख दुर भेल ॥

हर कर कंकण चारिम फेर, सुरगणे कुसुम वृष्टि काए देल ॥

हर कर कंकण पाचम फेर, किलर कोतुक गावए खेल ॥

हर कर कंकण छठम फेर, हरषित देवनारि सब खेल ॥

हर कर कंकण सातम फेर, एकहि बओक कुवहले डेल ॥

हर कर कंकण आठम फेर, सकल सुरासुर आनन्द भेल ॥

साठिक चाडर भावक पात, कंकण प्रायस शंकर गात ॥

नृपजगजोतिमल्ल कौतुके गाय, लाख एक दुइ बुझए भाव ॥ १ ॥]]

॥ ऋष्युक्ति गीत ॥ आसाबरी खर्ज ॥

कौतुक एक बड भेला, जखने महादेव वेदी भेला ॥

जटी हलु अंकुति लाई, शिकहले सुरसरि (नेलि) बरिआई ॥

१. य० पृ० सं०—२१; एवम्—२३ क ।

२. एहि ठाम (पत्रक द्वितीय पंक्तिमें) छूट चिल्ल देल छैक किन्तु पत्रक कोनो
कातमें सम्बन्ध राखल छल अंश लिखित नहि छैक । वस्तुतः एहि सम्बन्धक
एकटा सम्पूर्ण गीत एकसं—१क पर अछि जे 'एक' अखु सन चिल्ल बड
कड थारम्भ कयल गेल अछि । अतः एकसं—१क फेर गीत (जे सोरो पत्रमें
अछि) एतः य० पृ० सं०—२१; एवम्—२३कमें द्वितीयमें निबध कड
अन्तर्भूत कयल गेल अछि ।

३. एकसं१क अन्तर्भूत ।

हरगोरीविवाह नाटक

पैतालिस

बसहए हकु कुस खाई लावा देखि फनि उठल कोफाई ।
 लावा भासल जाई भूलल वासुकि बिछि बिछि जाई ।
 वास छाल भासल जाई फनि कुकुकारे बसह बिजुजाई ।
 बिद्यापति कवि ईस बुमाउ रूपनरायण होव चिराउ ॥
 ईश्वर चरित जेहि तेहि भाँति सुखर ॥

(मेना) [हे ऋषीश्वर हमरो मोचर मुनु,] ॥

॥ मेनोवित गीत ॥ मालव ॥ छ, ए, [चो] ॥

पञ्चानन १९ न पुरमथन भयङ्कर संकर नाम कवने घरिआ,
 तिनि नयन हर एक हुताशन न जानए कुल कवन अवतरिआ ॥

१. ई गीत परिवर्तित रूपमे मिथिलामे प्रचलित अछि । प्रचलनमे एकर दुइ
 मोट रूप अछि ।

(क) कबीरधर जन्वासाक मङ्गलन, गीत—१६ ।

वानन भरल बढाय । उमत मवाधिय भनम लोटाव ॥
 मगाइनि देखि जमाय । हुम नै परोख पहन जमाय ॥
 गरी देल वोपटा लगाय । घर फनिपति उठलाह पुकुआय ।
 जटा देल अँकुसी लगाय । शिर गुरसरि जल गेली बडिआय ॥
 बेदी देल लावा छिड़िआय । भूलल वासुकि चुनिचुनि लाय ॥
 सुकवि बिद्यापति नाव । हर परतन घर गिरजा पाव ॥

(ख) मिथिलागीतसंग्रह, खण्ड—१; मित्र-मजुमदार, गीत—१०३ ।

हे मगाइनि देखहु जमाय ।
 शिवक नाव फुटल जटा । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
 जटा देल अँकुसी लगाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
 निकितहि गुरसरि गेल बहराय ।
 बेदी देल लावा छिड़िआय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
 भूलल वासुकि बिछिबिछि लाय ।
 बडा भरि घोरल कवाय । आगे माइ ताहि उपर नाग घटा ॥
 उमत महादेव असम लगाय ।
 भनहि बिद्यापति गाओल । आगे माइ गीरिगह्वर कोबर जाय ॥

२. य० पु० सं०—२२; एवम्—२३ख ।

मिथिलास

जगज्ज्योतिर्मलक

माए न बाए साप धगे खेलए मेलए नसभ विगन्त करी,
 मनमथ मारि नारि आलिंगन उमत बुझाय कजोन परी ॥
 [पावन गंग मथा यदि गोबहि गोबहि काइ जटा बिप(?), नी,
 संसय तोरि के मोरि बुझावए इति अनुचित अनुचित अपनी ॥]
 भनइ बिद्यापति सुनहु मवाइनि कजोने बुझाओत अगत गुरु,
 राजा शिवसिंह रूपनरायण सकल पावक जन कलपतक ॥
 हे ऋषीश्वर, महादेवक अति विचित्र चरित बुकिगहि जाइ
 छए ॥^१

[[१ वरारी ॥]]

बिहिन बिवाह उपारव, मुगमद चन्दन गारव,
 माइ हे, उवटन साजव रे ॥
 ई सवे हुनि न सोहावए, आक धुधुर पत्र भावए
 माइ हे, आँग भतम लावए रे ॥
 विषम भुजगमय भूषण, अओर कहुव कत दूषण,
 माइ हे, साँखव अनुसन रे ॥
 आँखव नयन कजोने भाँति, पसरने मुकुज अनल कान्ति,
 माइ हे, कर मोरा होअ साँति रे ॥
 मृग जगजोतिमल भागे, ओहे हर सबक निदामे,
 माइ हे, जगजन जाने रे ॥
 ॥ सम्बैमिलिआ कौतुकागार गीत गायलि ॥

बनाथी ॥ प्र ॥

शिवे शिरिजल एहे विभुवन, विभुवन धारण कारण ॥

जय जय मङ्गल सर ॥

१. एहि ठाम बकरेखा जकाँ विचित्र छूट चिह्न समाओल अछि ।

एवम्-१२ क पर 'एक' अछु सन छूट सङ्केतक चिह्न वऽ 'वरारी' रागमे
 एक मोट गीत अछि जे ओहि पत्र पर पाँच पंक्तिमे सम्पन्न भेल अछि ।
 ओहि गीतक प्रसङ्गसँ निश्चय होइछ जे एही स्थलक छूटस गीत थीक ।
 अत ओहि गीतके एतऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अछि ।

२. एवम्-१२क केर पहिल पाँच पंक्तिक गीत एतऽधरि कोटहपमे निबद्ध
 कऽ अन्तर्भुक्त कयल गेल अलि ।

हरगौरीविवाह नाटक

संशालित

कणिमणि सोहित मुन्दर, मुन्दर १। र घबलमहेश्वर
अनल चाँव रवि लोचन, लोचन देखि दुख मोचन ॥
धरिए अनप घर दुइ कर, दुइ कर जिजुल बगछ कर ॥
नृपजगजोति नाव कोबर, कोबर गाने पापहर ॥
महा, हे गिरिराज हमे पूर्ण मनोरथ भेलाहु ३ अतएव, हमरा अनुजा दिअओ,
हमे आश्रम जाओ ॥ १

(हिमा,) [४ हे नाव, मोरा किछु गोचर करे छजौ ।

॥ हिमालय मेनोक्ति गीत ॥

मालव ॥ चो ॥

तुअ पद जोर, सकल सुरासुरे वन्दिअ
कि पुर आशा सवय हृदय छोडे दिगधासा ॥
विनव मन्त्री ओरे, गोरि, गोरि प्रतिपालवि
कि अत जिव, तहहि बेआपित सोहे शिव ॥
गिरि पर मोर, गगन गरज सुनि हरखए,
की जैनन, तहेन देखि हुने विनवन ॥
अविनय बोरे, ते किछु पड़ल मोर,
सेहे सवे, की अविरल, खेमनु कृपा कए, विसैसर
आनन्दे मोर, अओर पुलके पुर तनु मोर,
की निज मति, बनए समति नृपजगजोति ॥

गीतार्थ आकथति ॥ ॥ ४ []

हिमा, हे ईश्वर, ओहाओ अनुदेश भुवनक अधिपति, अहेन इच्छा हो ॥

१. य० पृ० सं०—२३; एवम—२४ क ।

२. एहि ठाम छूट चित्त (.) ओ चित्तक ऊपर से '४' अंक देल छैक ।

३. एतहु (.) एहन छूट चित्त अछि । आगा २४ ख पर लिखित वाक्य ओ गीत
एहि बानवक बादे समीचीन अछि ।

४. य० पृ० सं०—२३; एवम—२४कमे छूटल हिमालयक गद्य कथन एवं गीत
एवम—२४ख पर 'चारि' अंक लीखि कऽ अंकित अछि । अतः ओहि समस्त
अंशके कोठ हृदये निबद्ध कऽ य० पृ० सं०—२३, एवम—२४कमे एतऽ धरि
अन्तर्भूत कऽ देल गेल अछि ।

अठतालिस

नगजगजोति मंगलरूप

॥ महादेवसमगणो भीतेन निरुचरति ॥ देशाख ॥ ए ॥

बिहित विवाह काहि नहि छोड,
अतमे जन्ममे हर गोरिहि सोह ॥

कोणभाषा ॥

अहा, हे पार्वती, ओहाओ अवला, एहि बसह चडि लिअओ ॥

गौरी सलजं मधुर विलोकते ॥ द्विको ॥

आदि, हे ईश्वर, गौरी राजकन्या, अति कोमल, नहु नहु चलू ॥

महा, हे ऋषीश्वर सर्वथा ॥

सेना, हे प्रभु गौरी विनु उहेन बड होईछ ॥

हिमा, ओ शैलोनमनाथ ॥

सेना, हे प्रभु हमर गोचर सुनु ॥

॥ मेनोक्ति गीत ॥ सोहे ॥ प्र ॥ ए ॥

मल दिवसकर भोरा, बुझल जलीपन तोरा, अति भोरा लो ॥
तपोवन अछल तपसी, बिकह सकलभुज रसी, शिर शशी लो ॥
अपतप सवे दुर गेला, रमणि रङ्ग मन देला, ए कि भेला लो ॥
कण्ठ बोलवि मधुवानी, हरललि मोरि प्रवानी, अति सानी लो ॥
बांधहि इण्डेर माला, पहिरव बाधेर छाला, कणिमाला लो ॥
किष्णपुरी सिवदासे, परिपूरव मोर आसे, विवदासे लो ॥

हिमा, ओ ईश्वर शैलोनमनाथ, हुनक चरित सोहे की जानहु, मल ठाजो
हमरा कन्या गेलि, ईश्वरे स्नेहे अखरीर, कलि लिअपि से भोजो
कहै छजो मुनु ॥

॥ हिमालयमीतिगीत ॥ पनाओ ॥ [प्र] लज ॥

अय जय बाहुन जय त्रिपुरारी, अय अयपुष्य जय अयशारी ॥

आध घबल घर आधा गोरा, आध वाच छाख आध पटोरा ॥

१. 'हम' एवं 'हम' सेहो पड़ल जा सकैछ ।

१. य० पृ० सं०—२४; एवम—१ख ।

३. य० पृ० सं०—२५; एवम—२क ।

हरगोरीविवाह नाटक

उमचास

आध भोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥
 आध हाल आध आधा मोति । आध चन्दन आध आध विभूति ॥
 आध चाँद आध सिन्दुर तोड़े । आध विरह आध जग मोहे ॥
 भने कविरतन । विधाता जाने । बुद्ध कए बाँटल एक पराणे ॥
 हे मेना । गौरी विवाह सम्पूर्ण । केरल । अन्तर । हमरा अन्तर
 जाऊ ॥

मेना । हे प्रभु । पहने योग्य ॥

१. मूलमे 'कविरतन'को पंक्ति कवचमे दुहु विससँ सम्बरेखासँ चेरि कऽ पत्रक
 अधोभागमे 'विद्यापति' विकल्प पाठ देल गेल अछि, किन्तु 'विद्यापति' रहने
 छन्दोभंग भऽ जाइछ ।

२. ई गीत 'नेपालमदायनी'मे 'अशिता-विहीन' गीतकवचमे भेटैछ । गीत द्रष्टव्य
 थिक—

जए जए बाबुर जए त्रिपुरारि । जए अधपुरुष जए अधनारि ॥ ४७ ॥
 आधा अधक आधा तनु गोरा । आध सहज कृप आध कठोरा ॥
 आध हुडमाळा आधा मोरी । आध अन्दन तोभे आध विभूती ॥
 आध शैलन मति आधा मोरा । आध पटोरे आध मुख खोरा ॥
 आध जोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥
 आध चान्द आध सिन्दुर तोभा । आध विरह आध जग लोभा ॥

—विद्यापति पदावली, भाग— १, पृ०-३७५—७६, बिहार राष्ट्रभाषा
 परिषद पटना ।

सँह गीत 'रागततरङ्गिणी'मे धनछी रागक साक्षमथी प्रमेयक उदाहरणमे
 कविरतनक अशिता मुक्त भेटैछ । रागततरङ्गिणीमे पाठांतर कम अछि किन्तु
 जे अछि ते विशेष ध्यान देवा योग्य । रागततरङ्गिणी (पृ० १०५) क गीत निम्न
 रूपक अछि—

जय जय बाबुर जय त्रिपुरारी । जय अध पुरुष जय अधनारि ॥
 आध अधक तनु आध तनु गोरा । आध पटोरे आध मुख खोरा ॥
 आध जोग आध भोग बिलासा । आध पिनाक आध नगवासा ॥
 आध सिन्दुर सिन्दुर आध विभूती । आध हुडमाळा आध नगमोती ॥
 भने कविरतन विधाता जाने । बुद्ध कए बाँटल एक पराणे ॥

२०. य०. पृ०. २०—२६; पृथक्— २५ ।

पञ्चाश

रागततरङ्गिणी

मेना हिमालयी गौरीके निम्नवर्ती ॥

माकल (४७) ॥

विष्णु सत्त्व मुनिहु गहि जानी ।

एक ओहे जानि मोरि भवानी

विष्णु के चरण चरण ॥ ४८ ॥

॥ कोणभाषा ॥

(हिमा ।) हे मेना । धन्य मोर भाग्य । बहुवर्द्धन भुवनाधिपति श्रीमहादेव
 जमाता ।

मेना । ईश्वरहि कृपाये ॥

द्वितीय (कोरी) ॥

हिमा । धन्य मोरि कोवि । जहि नवागी नग्य केक ।

हिमा । तल्लि भवानीककर स्मरण करैते । नद्वय गए ॥ ४९ ॥

इत्यन्तः संक्षेपः ॥

॥ गृध्रिगौरी गृध्रिगे महादेवो वराहो रामेक प्रथिति ॥

कोणभाषा ॥

महा । हे गृध्रीश्वर । ई भागवती नदी अति पवित्र हमरा हृदय खोजी । ई
 गृध्रिभूति भेलहु ॥

गृध्रि । अति शुभितल अऊ ॥

त्रितीय ॥

गृध्रि । हे ईश्वर । ओहाओ पशुपति रामे । कजोन । ठमा रहिय ॥

महा । एहै अपलहु । ये ठमा ॥

महा । हे गृध्रीश्वर । ई हिमालयक प्रत्यन्त पर्वत ई नेपाल मण्डल अति
 पवित्र । तपूहु ई वागमती नदी । ई पशुपति । स्वाम । ई गृध्रीश्वरी
 पीठ । ई पृथ्वीहि तार थी [क] ॥

इसौरी विवाह नाटक

एकवचन

अहि हिमाद्रेशुद्ध शिखरत् स्त्रीदधुता बागवती नदी ।
 बागीरथ्याः घातपुष्पं पवित्रं तज्जलं विदुः ॥
 गोकर्णस्य च प्राचीनः पशुवैद्यतरेण च ।
 तत्र स्नात्वा हरेर्लोकं नृपस्त्वयं जलं उवाच ॥
 अपस्वा देहं नदीं याति नमस्कोकं च संशयः ।
 लक्ष्मीनां वरा पुण्यां बागवती सर्वतो मना ॥
 जो सवहि वचने बराह पुराणादि अकर माहात्म्य कहलछु से नेवाल
 मन्त्रल इहे श्री(क) ॥

महा वंदे ॥

महादेवी गौरीप्रति

हे गौरी इहाका वंदनस्य सन देखइ छी कहने ॥

[गौरी वंदनस्य कहै छथी ॥]

॥ गौरुक्ति गीत ॥ वराली ॥ प्र ॥

समा किये गयावति गौरि
 सरल सनति मइ ओहि अइलहु पावल भवत ओरि ॥
 न घर संवर न पिठि अवर न मिल ऐव उपारे
 तनय पापुर भूरे वेआकुल किने गये देख अवारे ॥
 बासुकि जीउत पवन पिउत हरे जीउत विष खाई
 चोचक स्वामी बुहु सल मिलल हमर कोन खवाई ॥

१. य० पृ० सं०—१७; ए३स०—१क।

२. य० पृ० सं०—२८; ए३स०—१ख।

३. 'खवाई' से 'व' अक्षर पर छिन्न जको छेक ।

पेट पटकल पाळ थोटकल पाकल भोहरि गोछी
 ताहि बुझा हाथ ओ बिहि बेलहु ते मए पापिनी थोछी ॥
 माइ न सोचल बापे न सोचल खोजल वैव धपने
 बिहिक लिखल भेटिन पावए साखिए मनहि मने ॥
 भवे विद्यापति सुन पारबति ओ घर त्रिभुवन बेवा
 जगत ईसर सामि तोहि निजु कर जोरि कर सेवा ॥

गीतार्थ अवयवति ॥

महा हे प्रिये ई हमरा साहजिके श्री(क), वीनु निमिते कोष किए
 करै छी ॥

१. एहि गीतक प्रसंग भाव आ कतोक पत्तिसे साम्प्र खल बिद्यापतिक एक
 गीत लोककण्ठमे अछि जकर संकलन कवीश्वर चन्दासा कयने छलाहः
 गीत विस्वरूपक अछि—

जकर नगर एते पुर भाटन ते कोन सुख निविल्ल ने माई ।
 खेती न करथि बिखि न भांथि वालक भोजन चाही ने माई ॥
 न घर अम्बर न घर लम्बर न घर पैव उपार ने माई ।
 एक दिन मुख तहको न जाइ माइके मास उप्रास ने माई ॥
 थोदो भागि पधार जे देखनि बाघक छाल ओछाय ने माई ।
 गौरी सोहावनि गल ले गेली कूलस बसहा खाइ ने माई ॥
 पांच मुखे विषकाकूर जेयथि छी मुख गेनथि वेढा ने माई ।
 सहस्रकला लय बासुकि जेयथि केळो न कहै थारि वेढा ने माई ।
 बासुकि जीवथि पवन भिबथि बाकूर जहर खाप ने माई ।
 स्वामी हमर एहि बिधि जेयथि हमर कोन उपाय ने माई ॥
 भनहि विद्यापति सुनु ए मनाहन बड़ जानि सेवा करल ने माई ।
 एतक मुख दुख एतहि जेपक ओतक कोन उपाय ने माई ॥

चन्द्रासाक संग्रह, गीत—४२

अधनत न कर रे धनि आनन चान्दा
 ओधन गुणक रे मोर होखको छाक ॥ १५ ॥
 न कर न कर रे धनि अपद रोसे
 कहहु मानिन रे मोर कहहु दोसे ॥ १६ ॥
 अधन कोयल रे नक परलन भासे
 मखिन न कर रे लखर निनासे ॥
 विरह रहन रे यह देह कराळा
 देह हुषारन रे धनि नालकि माळा ॥
 तनुरचतुसुज रे धन निजो नैनामे
 सुन कलामति रे निना बिना ए बाहे ॥ १७ ॥

गौरी, हे प्रभु मोनो फत रहव ॥

॥ गौरीकी गीत ॥ राजविजय ॥ ज. ॥

तनजिआ मोरे धन केसो न चिलारी ॥ फलह राजकुमारी ॥ १८ ॥
 तपसिया मोरे मुख हेरि हरे ॥ तोरा मुख कत रूप बरे ॥
 अराजूट कोट गोड चन्दा ॥ जायि जानल धूरि कन्दा ॥

१. एहि ठाम पंक्ति अन्तमे लम्बरेखामे तीन टा विन्हु देल छेक ।

२. य० पृ० सं०—२४; एवम—४६ ।

३. रामजनन संगह (गीत-४)मे यह गीत "मल्लाल" रागमे देल अछि ।

'धुब' शब्द नहि अछि । पाठान्त नहि । यह गीत ब्रह्म—चतुरचतुसुज
 एवं गीतगतदशो, गीत संख्या—१२ ।

सुल तीरल मए आछे, सेनो भेल बसहुक घाडे ॥
 विष्णुपुरी हेन भावे ॥ ओहे जोधि जगह किराने ॥ १८ ॥

[महरा ॥ हे प्रिये सुनह ॥

[१ आतावरी ॥ श्री ॥

१. य० पृ० सं०—३०; एवम—४६ ।

२. एवम—४६ पर एहि ठाम छूट चिह्न वऽ कऽ पयक पुरका भागमे
 लिखल अछि—महरा, हे प्रिये सुनह ॥ आतावरी ॥ श्री ॥ ओहे दिन-दिन
 होख खीन ॥ नीतार्थ बाधयति ॥ गौरी, इहाक श्रीलोपम अघीन
 किछु विमोक्षण मोरो ॥ ॥ कानरो ॥ पुरि ॥ दिज जुबती हर' ।
 एवम—१२क पर पाँच पंक्तिमे एकटा गीत सम्पन्न कऽ छठम पंक्तिमे
 'आतावरी ॥ श्री ॥' वऽ ओहे दिने दिने होख छिने'मे एकटा गीत
 बारम्बार होइछ जे एवम—१२ ख पर छठम पंक्तिमे मध्यमे सम्पन्न होइछ ।
 एवम—१२क पर शमोलेखक पदवात् तथा अस्तुत गीतक आरम्भमे
 पङ्क्ति छूट चिह्न वऽ पयक नीचाँमे छेक कि कनकलता अरविगदा ।
 एवम—१२ख पर छठम पंक्तिमे 'कानरो ॥ प ॥' वऽ द्विजजुवती हर'
 मे गीत आरम्भ होइछ । किन्तु एहिठाम डेढ पंक्तिमे गीतक बारि चरण
 मान अछि । एह गीतमे 'दिज' शब्द पर छूट चिह्न वऽ कऽ अविनायको
 लिखल अछि विमोक्षित जन्तुमिधु किराने ॥' य० पृ० सं०—३०; एवम—
 ४६ पर संकेतित एवं एवम—१२ क-ख पर पहिलवित अंशके य० पृ० सं०
 —३० मे अन्तमुपल कयल गेल अछि ।

३. य० पृ० सं०—३०; एवम—४६ खमे अन्तमुपल एवम—१२क केर अन्तिम
 दुव पंक्ति ।

(आतावरी ॥ जो ॥ ?)

ओहे दिने दिने होअ खिने, कबहु न धोअए फलझू मलिनै,
पुर भेले गरसिअ तमे, हरि न होअ तुम आत्म सरो ॥
पुरहु मनोरथ गोरी, सर ॥

१. ई पवित्र कोनो स्वतन्त्र गीतक सङ्केत लभैत अछि । कारण आपन के गीत अछि तकरा सङ्ग एकर सङ्केत बँधैत नहि अछि । सम्भव अछि एहि गीतक पूर्णरूप कोनो स्वतन्त्र रूपमे होल गेल हो आ ओ पत्र वर्तमान हस्तलेखन विच्छिन्न मऽ कऽ हेरा गेल हो । रायचरित्रिणी (पृ० ७६-७७)मे 'भोगिनी आतावरी' रायक उदाहरणमे 'कविरतनाञ्जी'क एकटा गीत अछि जकर आरम्भ 'कनकलता अरविन्दा'मे होइछ । एहि गीतमे नायिकाक कथक बहु विवक्षित वस्तु भेल अछि । वर्तमान प्रसङ्गमे महादेवी गोरीक कर्मातिपायका वर्णन कयलनि अछि । अतः 'कविरतनाञ्जी'क उल्लिखित गीत एहि ठामक हेतु पूर्ण उपयुक्त अछि । 'कविरतनाञ्जी' को 'कविरतन'के अश्विन मानल जाइत छनि । कविरतनक अष्टगौरीश्वर वर्णनात्मक गीत एहि नाटकमे पूर्ण प्रयुक्त भेल देखल गेल अछि । अतः नाटककार द्वारा कवि रतन (रतनाञ्जी)क दोसरो गीतक प्रयोग करवामे कोनो अवज्ञा नहि लभैत । कविरतनाञ्जीक ई पवित्र गीत निम्न रूपक अछि—

कनकलता अरविन्दा मजना भोजिनि छपि गेल चन्दा ॥
केशो बोल समथ भमरा केशो बोल नहि नहि जलज जहोरा ॥
केशो बोल सवाल देहला केशो बोल सहि नहि मोष मिलला ॥
छँपए नर जन नहीं (केशो) बोल तोर मुख सम नहीं ॥
कवि रतनाञ्जी माने सङ्ग कलझू दुखयो असमाने ॥
मिलु रति मदन समाशा देखल देवो लखनचन्द राजा ॥

वनहि बस' ए अहनीसे धुण कर कोहि किए वह दोखे,
बोहि नहि भनमय बाणे हरि नहि शीहर मन समाने ॥
एकहि करए कहु राखे मदन बेसाखि सबहि मन तावे,
कि कहय तोहिहि खजानी हरि तह नहि होअ तुम सम वाणी ॥
दाव बनल ओहि वाहे नामर जन ओहि नहि अवगाह,
अरे न घरए ताहि कोइ हरि नहि कामिनि कुच सम होई ॥
चान्द हरिण पिक मिरि, तुअ ठनु जीवन चाण्डक मिरि,
नृपवगजोत्तमल माने, सवहिक शङ्कर कर समवाणे ॥^{११}]

गीतार्थ आशयति ॥

गोरी, इहाक बौलोक्य अधीन किछु विशिष्ट मोरो ॥^{१२}]

[[१४कावरा ॥ ५ ॥

[निन्दति तन्मनमिन्दु किरण ॥^{१३}]

द्विज युवती हर गोमि कपटे अर, अनेक जाति फुल मुँह,
विभुवन नाथ, भूतनाथ साध, न हरि हरि तुअ तुले ॥^{१४}]

महा, हे पार्वति [इहाक आनन्दे]^{१५} [एहिनी ठाँव] मोरा गुन्य करएक मन
होइछ ॥

१. एवम्—१२ छ केर साढ़े पाँच पङ्क्ति ।

२. एकरा पश्चात् कोनो अङ्क दऽ हु पासी बेल छैक ।

३. ई वाक्य एवम्—४ छ केर ऊर्ध्वभागमे अछि अकर उल्लेख पुन भेल अछि ।

४. एवम्—१२ छ केर अँहु पङ्क्ति ।

५. ई चरण अज उद्धृत गीत धीक वा स्वतन्त्र गीतक प्रथम पङ्क्ति-
सङ्केत ?

६. ई गीत एतदेरा अछि वा अपूर्ण से शङ्का कयल जा सकैछ ।

७. एहि ठाम () एहन छूट चिल्ल बेल छैक आ तकरो बीचमे छूट चिन्ह
देख छैक । एवम्—४ छ केर ऊर्ध्व भागमे पूर्वोद्धृत छूटल पङ्क्तिक
ऊपर लिखल छैक 'इहाक आनन्दे' तथा छूट चिल्ल वाला पङ्क्तिक
सोखे पलक बहिन भागमे तिरछा कऽ सूक्ष्म अक्षरमे लिखल छैक
'एहिनीठाँव' ।

मोरी भरने, समिए धम-चन्द्रा, बाध खिचिए र वतह कर ददा ॥
कजोने परि होएक ताठ निरदाहे, परम वेआकुल विमुक्ता गहे ॥ ध्रुव ॥
सिरे मुरसिरे भरे गेलि बडिबाई, नयन हुतात्म परते गिझाई ॥
समरि ससल कणि दिसे विषे धुरे, नहिके ऊरे भक्त कातिक मधुरे ॥
सुकविसयानन्य विषे कर सेवा, देव अमय वर गंकर देवा ॥
मोरी हे ख्योश्वर, ईश्वर नृत्य देखि, हगराहु तावएक मत' [(उत्साह)]
होइछा ।

खणि हे पावनेति, जोहाको ईश्वरक अ'ई' सारीरक छवि ॥

॥ गौधु'क्त गीत ॥ मेघमल्लाल ॥ अ ॥

पान नुदङ्ग, तान ताल रव, ध्रुव उषट ताहा देखि,
ईसर सपुत, मगल नाचत, किमरि इ दुख लेई ॥
बेडि छिं तकरि छिं, देखि छिं तकरि छिं, टकनकता ॥
हर नाथए र तत्त थैर र तत्त थैर ॥ ध्रु ॥
नाथ सल्लप आन एक ईसर, भुक्ति जन मुल्लक निवास,
दुखि जन दुख हर वेअ परमनय, सब मन हो परगास ॥

थेठक

[न कथे एता, ता टकनक ताता, बाध गारे थ गयेइता ॥

हरना ॥

एहि बखार संसार सार एक सिधे गद पंकज ओर,
महिगति अगजोति मनए समति नित एहि जगु केओ होअ मोर ॥
बेडिछिं फनि बधेना, टपेडिछिं फनि टपेना
टपेना बधेना वे गर्भे दसि' ॥]

२. 'नाथएक मत' एहि वृ शब्दके ऊपरमे हुनु कातसं सम्बरेछास घेरि ओहो सोछा
पत्रक अधोनाममे वैकल्पिक पाठ 'उत्साह' देख अछि ।

२. पृ० पृ० सं०—३९; पृ० सं०—५ क ।

३. एहि गीतक मृदङ्गक बोलपला अंश उबकल आ लेपावलसन रहने पदबोले
अत्यन्त कष्टकर अछि ।

बना हे विषे, साधु साधु हमरा परिश्रम बड भेल, अतएव जन
एक जुआ छेआहु ॥

मोरी ईश्वर सर्वथा ॥

॥ मालव ॥ अ ॥

सशवर डमक बसह बसछाला, तानि पिपाक बलए जनमाला ॥
जल जल बोलवे आइल आनी, सबहि वे'रि तये जिनल भवानी ॥ ध्रुव ॥
आइल सरबस सवे रेल हारी, पुनु [पुनु] जोहिल छुछि अचारी ॥
बाध गरीर हरल हरे हारी, सेहओ खिलल गिरिराज कुमारी ॥
तजन कजाए रहल शिरनाई, हर आखिलल हरषि ननाई ॥
पुनुत जुआरी गोविन्द माया, गोरी सहित हर पुरकनु आया ॥

महादेवकोष' लखा, तयैव कोषांतरे तिष्ठति ॥

खणि हे पावनेति, महादेव मनोदुखे बैसल छवि गए मनावह ॥
मोरी हे ख्योश्वर पुनु ॥

॥ गौधु'क्त गीत ॥ अ'अंश ॥ अ ॥

अनि अनि पुछे गोरी देह उपवेशे, माइहे,

कि देव जहाउव' दसर सहै ॥

आठ सुरैया लेज हुनि न सोहावए, जतहु फतहु बाध छाल ओछावए ॥
ओर क'पुर पान दुहि न सोहाव' बाध धुतुर फूल तकि मल भावे ॥
विष्णुपुरी कहे, हित उपवेशे, ह्रास कोअण बाध बूढ भइये ॥

॥ गीतार्थ' आवयति ॥

खणि हे पावनेति, शिवक नरिस बुझैते कठिन ची'क, मोझी कहे
छबो अवधान कर ॥

अनुक्ति मात ॥ मालव ॥ चो ॥

जाहि कुनुम धनु, भरमे धवल धनु, अनुजन भोजन भागे,
शिर पाये को ॥

१. पृ० पृ० सं०—३२; पृ० सं०—५ क ।

२. 'छुछिअ धारी' एहनो पदच्छेद संभव अछि ।

३. पृ० पृ० सं०—३३; पृ० सं०—६ क ।

कहोने गुने क्षिमिनि^१ राजकुमारी गुन गारी लो ॥ ध्रुव ॥
तहव दिगम्बर, वृद्ध बल्लभ, ध्रुव वाधरि छाया,
रदमाला लो ॥

भुत सेवक साथे, बटंग डमक हाथे, सवे खण सुतथि प्रशाने,
विषपाने लो ॥

जगदिश बोल भुन, गोरिक बक पुन, वेवहुक देव अदेशा,
पुर बाधा लो ॥

गीतार्थ भावमति ॥

अपन एहन रूप, बानका महादेवहिक प्रसादे खबे सिद्धि ॥
गोरी हे कृष्णेश्वर जोहाजे किछु ईश्वरक बाधि मुख जन छी ॥

गोप्युक्ति गीत ॥ गौडामालव ॥ २ ॥

बाधे	बिकट	बटा	तपिहु	चाँदरो	कोटा ॥
कन	भुग	खहस	बपस	बहि	पेला ॥
उमत	गहादेव	समत	न	भिला	॥
मोछि	मेलम	छार	सहज	न तेज	पार ॥
नाम	बभदेखो	हुडे	न	हृदय	केबो ॥
कवि	विद्यापति	गाऊ	जीवओ	सिबसिंह	राऊ ॥ ^१

[कृष्णि, ते इहे पए जानिओ, त्वराए ईश्वर ननाओ जाहु ॥
गोरी भजे काइ छजो] ॥

तलौ गोरी ईश्वर हस्त गृहीत्वा स्थापयामहे ॥

गोरी हे ईश्वर हम सजो किए हब छी, हम नैहर पडैअहु ॥

१. एहि ठाम (१) एहि प्रकारक चिह्न छेक ।

२. स० पु० सं०—३४; एकसं—६ ख ।

३. रागतरङ्गिणी (पृ०-१०७) में गौडामालवक गोडीय प्रवेशक उदाहरणसे ई गीत देल गेल अछि । पाठान्तर—बाधि, तपिहु चदिन, तेजए, चारिम पंक्ति अभाव । सुकाधि । निवओ । सिबसिंह ।

शांति

जगज्ज्योतिर्मल कुट

॥ महादेवोक्ति गीत ॥ बहुविधा ॥ ३९ ॥

हसलि भवानी न मानए शोध, बाजे अगह गोरि मोरे अनुरो(?)^१ घा ॥
जत किछु नग छोह बछए भगार, पहिलहि देव विम कणि मणिभार ॥
भूखला गान देवओ विपे तानि, पाडक बसहा देवउ पलाति ॥
बहुन विद्यापति पुनु पुनु सेव, चदलदेविपति बंधनाम देव ॥
कृष्णि हे महादेव, मोर विजयि मुगु ॥

कृष्णपुक्ति गीत ॥ मालव ॥ खज ॥

हूर हे देवए बएलहु मुख लागी, विषम नयन अनुजन वर आगो ॥
बसह पराएक आने पति, यत्नाल रहल गए नागे ॥
कशि उठि चलल बलावे, गोरि चलल गिरिराजक वागे ॥
उचित कहए नहि जाई, उमत जराध्व कथोमे उवाही ॥
विद्यापति कवि सेवा, देव अमय वर हाँकर देहा ॥^२

कृष्णि हे पार्वती, तोहे ईश्वरक अर्खगरीर, तहि सिने कोण नह
उचित ॥

गोरी हे कृष्णेश्वर एवनेय ॥

गोरी उठथाय महादेव समीप गेवा प्रसंग ॥

मोना किछु गोचर मिलछ, ते गोपीर करे छजो अवधान कछ ॥

१. स० पु० सं०—३५; एकसं—७ क ।

२. एहि ठाम 'भुखलह' शब्द कीखि अक्षरमे चाह अक्षर पर दुइ टा
अक्षरमे देल अछि जे 'चाह अक्षर'मे काटि देवाक हेतु प्रयुक्त भेल
अछि ।

३. ई गीत मिथिलाक कोत प्राचीन श्रोतसे नगैरनाथपुस्त सेहो प्राप्त
कथमे छलह वा हूरगोरीधरावली (गीत—३०) शीर्षकमे प्रकाशित
कथेलनि । निव-सकुमार (गीत—७९) मिथिलामे लोकमुख
संगृहीत 'हूरगोरी और गङ्गा विषमक पड' शीर्षकमे रखलनि ।
पाठान्तर—खि दे । अछलहु । विषम । अमुखने । बसहा पडएल ।
सुकायल नागे । तपि । बलावे । चललि । बसि । बोलए नहि जाई ।
उमत भुजाओव कथोमे उवाही । अनह विद्यापति बासे । गोरी संकर
पुराबन्ध बासे ।

४. स० पु० सं०—३६; एकसं—७ ख

हूरगोरीविधाह नाटक

प्रसंगि

अथय भल्ल होय तव मुख सुनिज, भयभ होय तव तनु, हरहे
नील रतन तम तामर चुन्दर, जारल कुटुम बन, गोरि हे ॥
मुजय मुपय तुज दुपय सवे पैज, किए वएल दिनमणि बरहे, हरहे
विमल कमल तम तुज मुख मंकल, वरसत होओ के आसे, गोरि हे ॥
अनल भाई रवि विषय बिलोचन, ई किए अदभुत रूपे, हरहे
विकए लानि कएल भीनि बिलोचन, गुज दन बमिज तऊने, गोरि हे ॥
भूय वेताल ताल रने नाचिज, वाचिज धरे धरे भीखि, हरहे
गान केओ कहु शरर सख ब्रह्म, जोहे एक बुझहु विदेशी, गोरि हे ॥
गुणजगतीति कह काहि न सोहए, गिरिजा गिरिज बिलासि, हरहे ॥
प्रणमि प्रणमि ओहे पुनुपुनु विनमय, दुर कर अरुण तरावे ॥ २

[महा दे प्राणप्रिये मोहु किहु कहै छि ॥]

[[] ॥ ॥ ॥]

१. य० पु० सं०—३७; एकल—स क ।

२. गीतक अन्तमे छुट चिह्न दस वर वक्षक ऊपरमे लिखत कहि, 'महा' है पति
प्रिये मोहु किहु कहै छि ॥ ॥ विधाक ॥ जो ॥

गिरिज गिरिज ॥ अमिताभ ॥ गीत ॥

एकल—११ वर एकल सम्पूर्ण गीत अति के गिरिजगिरिज
हर हिय हारिणि प्रारम्भ होय अति । ओ गीत वत्तमान स्वयं
गीत किन्तु प्रतिक्रिया कालमे छुटि अथवाक काय स्वतन्त्र पयने
दिलक गेल अति । 'अमिताभ ॥ गीत ॥' के धारम होनकाल गीत स्वतन्त्र
पयने कहा कहि केईछ ।

३. 'गौराहु' जोति 'रा' पर गीत गीत सम्बन्ध का शीक कथक
बोले अति ।

४. एकल—२१ का पर 'एक' अंक तन एक विशेष प्रकारक चिह्न दस वर गीत
आरम्भ गेल अति । ओ समस्त गीत य० पु० सं०—३७; एकल—स क मे
अमिताभ का देल गेल अति । एकल—३७ पर छह कहेतने भग
या विधान ॥ देल अति किन्तु एतद 'म कि न' अति के शक किन्तुना का
मिथुराकवैत धीक । रागमे है अथवा किहु ॥

गिरिज गिरिज हर हिय हारिणि, मधुगय रूप अमृत ॥
तिमिहु दिखोने सख दुख मोचन, के जग तोहर तऊने ॥
तुज मुख कलवर सब दिन रह पुर, मोर तिर बह नय बन्दा
तकल अलामय गुणगण कालय, तोह तह होय अनन्दा ॥
तोहे बर नागरि नय तह आचरि, तोहे छाडि के मोरा जाने
जन्मे जन्मे हमे अनेक लगन कए, पओकाह तोहहि किआने ॥
तोहर परिति पुनि सुगह सुलोचनि, बाहि देल तनु आवे
तोहर वरित सब कहि न होय आवे, पुरल मनोरथ लामे ॥
सबहि शुभनि मति हरक वरप गति, महिमति जगजोति भाने
दुर कएल भय नेह मोहि शयन वेह, लोह तेनि गति नहि आने ॥]

कवि, हे ईश्वर, जोहां दुःख व्यक्तिता तामरस्य देखि हमरा बढ आनन्द
मिलछ, अतएव स्तुति रत गवैछी ।

॥ गौरी कृष्णुक्ति गीत ॥ आसावरी ॥ जो ॥

होमे सतरथ सखतीदे, परलहु नीर नमीरे ॥
हे शिव शिव सर ॥
करण कएल तुज जानी, राखहु ईश भवानी ॥
करम धरम तप हीना, प्रलहु पाप बखानी ॥
तोहे प्रभुवन पति मान्य, हम तिरसीस अनाये ॥
करण महेश कह एके, अबे सब तोहर बिजेके ॥

१. य० पु० सं०—३७; एकल—स क ।

२. एहि गीतक भाव तथा कुछ गीत गीत विधानात्मक नाम पर चलैत गीतमे
भेदत अति । संभव अति के करण महेशक प्रस्तुत गीतके 'तोड़ि-मोड़ि'
का विधानात्मक नाम पर चलै देल गेल हो । गीत निम्नस्वरूप अति—

तोह प्रभु किमुन नये । हे हर हम तिरसीस अनाये ।
करम धरम तप हीने । परलहु पाप बखाने ॥
बेड़ भासल भास धारे । धीरथ नय रूपधारे ॥
सानर तम दुख धारे । अबहु करिज प्रतिकारे ॥
प्रवहि विद्यापति भाने । संकट करिज तरावे ॥

—महेश्वरायमुक्त (हरगौरी पदावली, गीत-४२), मि० प०, गीत-७७१ ।

अपि हे सत्यजन, नाटक नामा प्रकारक सबै छथो वाही ।
श्रीश्री जगज्योतिर्मल महाराजक अनुमति हुइ लोक कहै छथो ।

श्लोक ॥

नेवाह्लादकरन्तु किञ्चिदपरं शोधप्रसादायकं
चिरो स्मृत्युते प्रसीदमितरत्नमपि पादानहं ॥
मातीश्रीतिकरं किञ्चन तरुणस्वैक शिशोष्शीतिहं
पूर्णं समदरमैव्यन्ति विद्युत्वास्तवेवं विधं नाटकं ॥
ब्रह्म केचन साधयन्त्यनुदितं धर्मं परे त्वीप्सितं
नोक्षं केपि न नाट्यनीतिविधिना नानाविधं कामितं ॥
एवं सर्ववन्तर्कान्तु मनुते भूमीपति श्रीजगत् श्रीज्यो-
तिर्मलशिवार्धप्रचमधुषो ह्रीपदार्पणं तार्थकं ॥

॥ गीतमपरञ्च ॥ केदार ॥ खर्ज ॥

अओर राह निरवाह नाही शरण राखह ईश,
चाव चन्दन विभूति भूषण भाग्य शोखन भीस ॥
काय कुण्डल करहि कङ्कण बलन द्वार कणीस,
भूत सङ्ग नखन मन्दिर केलि कर अहनीस ॥
हृत्कमल जटा विराजित सखलि देव अगीश,
अगम रूप सरूपे सङ्गुर अओर कओन करीत ॥
परिहास प्राप्त उवास गानस बरज बन्दओ भीस ॥९

॥ सर्वे उत्थाय श्लोक पठन्ति ॥

तदेकमक्तिभावनावशाच्चकार नाटकं
य एतदुत्तमं उत्तमं सदस्य रूपतेः
अक्षय देव ईवतं समस्त लोक सेवितः
शिवः शिवानि मङ्गला तनोतु मङ्गलानि सा ॥

१. य० पृ० सं०-३९; एफ०-३६ ।

२. गीत-संग्रह, गीत-२३ । पाठांतर-तरुण । भोजन । सबहि । तरुण ।
हजोन । शरी । निरविश ।

३. य० पृ० सं०-४; एफ०-३६ ।

श्रीशिव

जगज्योतिर्मल-कृत

॥ तत्पकारमे नीतं ॥ मालव ॥ शु ॥

सात उपर कत राखहि मुनू समत वैवर्धन एहि विधि जानू ॥
जेठ कुट्ट विधि मुखन गरात मुखवान मख कएल उतास ॥
कत उधवार मंगल धुनि बाज भगत नगर बहु भुजन समाज ॥
नृपजगजोति देखि भव भीति करम कएल जन चलि धिरीति ॥
सुख वि तशमणि मंगल साक नृपजगजोतिमल होयु विराऊ ॥

॥ हे शुन्द अतपरं श्रीपशुपतिका स्तुति किछु करै छथो ॥

प्रथम प्रथमओ देव भणयति, शरी सधानन संजुत ॥
बाल बाल विनाल मशधर लोभन त्रय प्रेमित ॥
अनुर किशर नाग नर वर राकल सेवित शम्भुक ॥
बास विहित समाधि सङ्गत जोगि जन मणिपुरक ॥
कम्प कुम्प समान तनु कणि विहित पादिक पञ्चत ॥
शिपुर इर मलि वृष्ट दानव वर्ण खण्डन मन्त्रित ॥
हिर मन्त्राकिनि हाड किञ्चिणि बाल हार विराजित ॥
मलकादि भुजियर वृन्द बन्धित जातवादि सभाजित ॥
विषय मोह ममत्क परिहरि नित्य वसधि सुधान ॥
देहि रङ्गहि राख पदवी एहन के प्रभु धान ॥
कर करामत कमल सूलहि शिवक रूप अनूपम ॥
अहं अङ्गहि अङ्गना धरि तिरिहु भुवन अनुत्तम ॥
हर वाद पञ्चज निहित नामस नृपतिजगजोति भाजित ॥
माव/मत्ववराधि दारक भूति सिद्धि मनारत ॥

१. रागभजनसंग्रह, गीत-३९ । पाठांतर-सातसात बहुभुजकमान सभल
नेपाल द्विजवरहि मिलाव । कुट्ट । मख । जगजोतिमल ।

२. य० पृ० सं०-४१; एफ०-१०६ ।

३. एहि राम लम्ब रूपमे तीन विन्दु देल छैक ।

४. य० पृ० सं०-४२; एफ०-१०६ ।

हरमोरीविवाह नाटक

पंचदि

[॥ सर्वे उत्तम कुराग प्रायश्चित्त गीतं गायन्ति ॥

हे वन्द्यं नृत्य राग वेला निमग्न नदी ॥ ते कुरागओ गाविक ॥ ताहि
पावक प्रायश्चित्तार्थ भैरवी रागे ॥ हरिहर स्वरूप गर्व छी ॥

भैरवी ॥ चो ॥

गगन गगन ॥

(॥ भैरवी ॥ प्र ॥

गगन गगन सम ॥ जलधि जलधि सम ॥ ताहि उपमा नहि जाने ॥
के हर से हरि ॥ के हरि से हर ॥ एक बोहे रहसि विधाने ॥
एक कर तिरमूल ॥ एक कर सारंग ॥ एक कर डमरु बजावे ॥
एक कर पञ्चम ॥ हरि ॥ एक भय ॥ बुद्ध वस्तु लोक देखावे ॥
धहिने घर दिख ॥ गाये भजन दिख ॥ बुद्ध ओहे भक्त सखे ॥
ओ भगवापति ॥ ओ गिरिजापति ॥ के कुल हुनक सखे ॥
शिव शिव वापक ॥ हरि ॥ शुभदायक ॥ एहे दुहु एक पराणे ॥
मोह मगन जन ॥ संकट जल ॥ होख ओहे ताहि करवि तराणे ॥
सुकवि वंशमणि ॥ भूष जगजोति ॥ बुद्ध ॥ हरि ॥ चक्र ॥ पुण पाई ॥
कुराग गान अवस ॥ होख ॥ पावक ॥ भैरवि सह ॥ दुर जाई ॥)

१. ई गीत वर्तमान हस्तलिखित कोनो अतिरिक्त पत्रमे कतहु उपलब्ध नहि
अछि । किन्तु थिक ई अंशमणि अधिक हरिहर-स्वरूप-वर्णनात्मक गीतक
आरम्भिक अंग । एहि गीतक पूर्ण रूप नेपालक रात्रिपुत्र अभिलेखालयमे
रक्षित 'राग-भजन-संग्रह' (गीत—१०) नामक हस्तलिखित ग्रन्थमे भेटैछ ।
लोहितान सेहो ई गीत भैरवी रागहिमे देज गेल अछि । अन्तिम उद्भूत पंक्ति
खण्डित छैक । अन्तिममे कवि ओ हुनक पोषक नाम मन्त्र अछि । किन्तु
'नाना राग, (क्रमिक-प्रथम ३३८) गीत—३९ मे ई गीत पूर्ण अछि । गीत
पूर्णरूपमे ओतित्तै गेल गेल अछि ।

अनन्तशेषनाम प्रयोगक हेतु वाल्मीकीय रामायणक उचिततुलनीय—

गगन गगनाकारं सागर सागरोपमं ।

रामराज्यमोपुडं रामराज्यमोरिख ॥

केशवप्रति

अगज्योतिर्मल कृत

॥ हे वन्द्यं तवगारं कहरा गाविक ॥

कहरा ॥ चारङ्गी ॥ चो ॥

वदन धन्य मोर ॥ हर गुण कहिए ॥ धन्य धन्य सेहे चुनिए ॥
कर छुग धन्य कैर तमु अभिनय ॥ नयन धन्य सेहे देखिए ॥
वरण धन्य हर भगति करिए ॥ के हरित वृक्ष दुर जैहजो ॥
मोन जतने जाहि जोगि त पावए ॥ गति आवे अचिरहि वैहजो ॥
मतङ्ग न लिहिए पावक जानि परिहए ॥ तेहन विषम रस वसिए ॥
भजन पराभव देखि देखि नकमति ॥ पाछे पुन पंचवैहए ॥
भगति भाव महिमा के जानए ॥ के नहि एहि सोहावए ॥
नकोर जाँद जमि अचिरत सेवए ॥ नृपजमजो ॥ तिमल गावए ॥

[तृपतिः परिपातु पूर्णकामः पृथिवीं सत्सु निरात्मपादसु लोकाः ॥
अथ वर्षतु वासवः स्वकाले परमात्मनोपमस्तु देवः ॥]

॥ इति श्रीमहाराजाधिराज श्रीश्रीजगज्योतिर्मल कृत
पंचपंचाशत् भोतोपचरं हरगोरीविवाह नाम नाटकं समाप्तं ॥

श्रीमशानीनकरी प्रीणीतः ॥

॥ सम्भवत् ४७६ ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या सूर्यवासस
श्रीश्रीजगज्योतिर्मलदेवप्रभु आकुर सन तुलादाशस
अथ हरगोरी विवाह ध्यातव्य दशका क्रो ॥

(॥ शुभांगि भवन्तु ॥)

१. पं० पृ० सं०—४३; पृष्ठसं०—११६ ।

हरगोरीविवाह नाटक

संततडि

हरगौरीविवाह नाटक

राष्ट्रार्थ—संग्रह

अचिरेहि-पौष. अजगुत-आदित्य-अनक. अदवद-अवमृत. अन्वाह-अनवति. अपद-अकारण. अमिअ(ए)-अमृत. अजव-अवन करण. अमोवे-मुनमिमो. इहाका-अतिके. उमारक-उमदन लगामय. उत्पमि-ओरिआयले. उभत-उममत्. ऊत-अल्प. कजोनको-कोनहु. कजोगे-केकोन. कजने परिकोन प्रकारे. कहति-केहति. काह-किएक. काछए-वेश धनदध. कति-कामि, मोषा. कपानो-कपानो. कति छिअवि-कयले छवि. कोह-कोष. कोषह-कमा कछ. परमिअ-गौहूँछ. गिम-गीवा, कंड. गुहमिनि-गर्भमपी. गोमए-गुकरैछ. गोह-गुकाव. गोवर-गिवेदन. गोबहि-गुकरैछ छवि. कशु-रुपय-जावि करकव. घरम-घरै, चार. चिरी कोटा-चन्दमाक ओप. चिदवत-नरिअत. छलो-छो. जगनीपट्ट-पदा. जोगल-जोतल. जीनि-जीति. जुडाओन-शीतलकारक. जोर-गुमल. सोखि-चिन्ता करव. जोहा-अहा. टाह-गहवा विवेक. ठमा-ठाम. रवराए-तुरत. तकीहि-ताहिने, तत. तखर-तखर. ताने-तण करैछ. तुले-समान. धिर-स्थिर. खोवहि-खोपने छवि. बहुदोत-दशो दिहा. घुहर-गहिन. धोछो-मिगोवि. वाहिकबुद्धि-पशुबुद्धि. विजो-विज. निदाने-उपाय. निरीद-निरुपाय. अचवि-प्रमाण नड. पटकल-पचकल. पडओवाह-पडौलति. पडओवाह-पडौलति. परतने-प्रसन्न. पताहति-शुचार. पुने-पुष्पते. फाटिक-फाटिक. फोटगोट-नमहर ओप. ग्याज-लाज. वग-वमन करैछ. गलए-गलया. गार्गेरि-गार्ग. गानु-गिण्ड, दहनु. वीस-विष. वेआने-लाथे. वेआधि-आधि. रोष. वेआमि-व्याप्त. वेडिआ-वेटी, पुत्री. बीसुहर-बील मधुर. भगति-भक्ति. भुखल-भुखलमे. भोजन-भोजन. बीहेरि गोधी-बीहक गुच्छा. भविआर-भविभुक्त सार. मथा-माथ पर. मयाभिति-मगाहति. मयार-अकोन. मैको-हक. मीको-हक. यात्रा-याचना. यात्रे-याचना करैछ. राज-राजा. रावे-वजैछ. रवरे-रवरे. रवरे-रवरे. लोह-लोष. गिरी-श्री. गोमा. सजो-सै. सतरव-पार होयक. समजुत-संभुक्त. समजुल. सरीस-सदक. संवर-संवल. साहजिके-स्वामाविके. सीर-गिर. तोह-तोभैछ. होमाको पार-सड सकैछ. हिथ-हृदय.

अक्षरा

परिसिष्ट

जगज्योतिर्महकृत

कुञ्जविहार नाटक

जगज्योतिर्महकृत 'कुञ्जविहार नाटक' विशेष रूपसँ चर्चित रहल अछि । किन्तु ई पूर्वोक्तमे सुधी समाजक लक्ष्य प्रस्तुत रहि गइ सकल अछि । एहन सुचना देल जाइत रहल अछि जे पी० सी० बागजी महोदय 'परिचय' नामक ग्रंथमा सांस्कृतिक प्रवर्धन प्रकाशित करीने छलाह । परन्तु ओ अकरहु दृष्टि पर नहि आवि सकल । कतहु कतहु एकर समीक्षा कपलो गेल तँ जोशरा कोनो स्थितिमे पूर्ण नहि कहल जा सकैछ । रामेश्वर सिंह वरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रिन्सिपल 'पनीचा'क १९७६क द्वितीय अंकमे हजरा द्वारा संपादित मड हिन्दी भूमिकाक संग प्रकाशित भेल परन्तु ओहो विद्वान् द्वारा अतदेख रहि गेल ।

'कुञ्जविहार नाटक'क मूलप्रति काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे सुरक्षित अछि जे एहि नाटकक एक मात्र उपलब्ध प्रति छि । ई तालपत्र पर नेवारी लिपिमे विहित अछि । तालपत्रक आकार १२.१/२" × २.१/२" छैक । प्रति पृष्ठ पक्षिक संख्या पाँच ओ पत्रक संख्या बारह छैक । एहि नाटकमे गीतमात्र अछि अकर संख्या चौतिस अछि । तालपत्रक अन्तमे गीत संख्या प्रथम चरणक पञ्चिका देल गेल अछि । रचनाकारक कोनो सूचना नहि अछि ।

सर्वप्रथम एकर नामे अशुद्ध देल जाइत रहल अछि—कुञ्जविहारी नाटक । मूल प्रतिक खादि ओ अन्तमे क्रमशः लिखित अछि—'श्रीकुञ्जविहार नाम नाटक' 'भिकयते' तथा 'इति कुञ्जविहार नाम नाटकं सम्पूर्णम्' । अतः एहि नाटकक 'कुञ्ज' नाम पिक 'कुञ्जविहार नाटक' ।

एहि नाटकमे जे चौतिस गीत गीत अछि तकर तुलना गीत पञ्चिकाक प्रथम चरण-सूचीसँ कयला उपर पता चलैत अछि जे कयसँ कम तेरह गीत गीत एहन अछि अकर प्रथम चरण गीत-पञ्चिकाक सूचीसँ भिन्न अछि । निम्नलिखित तालिकासँ ई स्पष्ट होयत—

गीत-क्रमांक	उपलब्ध गीतक प्रथम चरण	गीत-पञ्चिकाक प्रथम चरणसँ
१.	कुञ्जविहार हरिआज	— वज्रित पवन
४.	जाहि वह जमुना तीर	— देख सनि
९.	सखि धाज	— अवग पथम
७.	असह बेदन सहि न जाए	— सुख सुधाक

कुञ्जविहार नाटक

अनहतरि

क.	कुल बहु नारि का बाज	—	नयन घोष
१०.	घन एक हनुडु आएव	—	नृपतिशिव
११.	कूबरि दुवरि विरह वैवाकुल	—	जाल बुनैते
१४.	जाएव भवुरि पुरि	—	हेन पिपा
१५.	कामुक चरण भेटि आज	—	जाइते अमुया
१६.	अकामिक बिहि मोर देल	—	तनु रि नामनि
२०.	आज देखलि मोर राधा	—	बलत हमे
२६.	बाहुण अनिया आओर कत	—	हुर नद
२८.	परित भेल मोर भाग	—	अन न देख

एहि अन्तरक व्याख्या कठिन अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतक जे सग्रह भेटल अछि ताहिमे हुनक नाटकक गीत सब सम्मिलित अछि अथवा एक सग्रहक गीत दोसरहु सग्रहमे भेटैत अछि । परन्तु कोनहु सग्रहमे ऊपर परिभाषित गीत नहि भेटैत अछि, संगहि गीतपरिच्छेदमे देल चरणसँ आरम्भ गीत सेहो नहि भेटैत अछि । 'कुञ्जविहार' नाटकक पहल गीतमे गीत संख्या—३, १०, १४, १६ जो २० दुइ-दुइ चरण मात्रक अछि । स्वष्टे, ई अपूर्ण गीत थिक, कारण एकर प्रसंगानुकूल भाव सेहो पूर्ण रूपट नहि छैक । शेष आठ गोठ गीतक आरम्भक चरण लुप्त अछि अथवा गीत-परिच्छेदक अनुसार पूर्व प्रयुक्त गीतक स्थानमे नवीने गीतक समावेश कऽ देल गेल ।

'कुञ्जविहार' नाटकक शेष एतैस गोठ गीतमे सतरहु गोठ गीत अन्यहु गीत सग्रहमे पाओल जाइछ । 'जगज्ज्योतिर्मल्लक कविसँ प्रसिद्ध ओ मुख्यवस्थित गीतसंग्रह अछि 'गीत पञ्चाशिका' । एकर रचना शकसंवत् १२२० (१६२८ ई०)मे भेल छल । एहिमे 'कुञ्जविहार'क एघारहु गोठ गीत भेटैत अछि जे निम्नलिखित संकेतक अछि । कोष्ठकमे 'गीतपञ्चाशिका'क संख्या लिहिष्ट अछि—३(७), ६(६), ११(२७), १२(४०), १५(२०), १७(२३), २१(३१), २२(३३), २३(३४), २४(३५), ३०(१२) । दोसर अछि 'गोठन संग्रह' । एहिमे १४५ गोठ गीत संकलित अछि । 'कुञ्जविहार'क पांच गोठ गीत एहिमे भेटैत अछि अकर संख्या कोष्ठकमे लिहिष्ट अछि—५(६१), १६(१३७), २४(७५), ३१(७७), ३२(७६) । तेसर 'नागारांग गीतसंग्रह'मे ५७ गोठ गीत संकलित अछि । 'कुञ्जविहार'क तैतोस गीत एहिमे तैतालिस गीतक रूपमे भेटैत अछि । शेष चारि गोठ गीत—१, २७, २८ जो ३४, अन्य कोष्ठक संग्रहमे नहि पाओल जाइछ ते' नवीन थिक । अन्य संग्रहमे प्राप्त गीतक संग तुलनात्मक पाठालोचन कयने अवस्थत सामान्य पाठान्तर देखल जाइत अछि ।

सप्तति

जगज्ज्योतिर्मल्लक कुञ्ज

'कुञ्जविहार' नाटक आहि रूपमे एहन उपलब्ध अछि, तकरा नाटक मानव कठिन प्रतीत होइत अछि मुदा एकर आदि ओ अन्तमे एकरा नाटक कहल गेल अछि । किन्तु नाटकक जे साम्य लक्षण अछि अथवा नेपाली नाटकक जे विशेषता सब होइछ अथवा जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक जे स्वरूप भेटैत अछि ते एहि नाटकमे नहि अछि । एहि ठाम प्रस्तावनाक उल्लेख नहि अछि । आरम्भ होइत अछि सैयली नान्दी गीतसँ । तदुपरि सूचना अछि 'सूत्रधार प्रवेश गीत' मुदा यीनो प्रवेश गीत नहि अछि । केवल अछि शिव स्तुति विषयक गीत । ओर सूचना देल जाइछ 'सूत्रधार निस्तार गीत' किन्तु एकर श्रोतक कोनो गीत नहि अछि । नेपालक नाटकमे सूत्रधार नटीक संग वातावरण करैत नाटक, नाटककार, नाट्यावसरक सूचना दैत देशवर्णना, नगरवर्णना, राजवर्णना, पृथ्वीवर्णना विषयक श्लोक वा गीत सदैव अछि । परन्तु एहि नाटकमे एहन किछु नहि अछि । अतः एहि नाटकमे सूत्रधार-प्रवेशक सूचनाक कोनो प्रयोजन सिद्ध नहि होइछ ।

नाटकक मुख्य भागमे मङ्ग निर्देश स्वतन्त्र रूपमे नहि देल गेल अछि । अग्रिम सम्बन्धी कोनो संकेत नहि अछि । अवश्ये पात्रक प्रवेशक सूचना 'प्रवेश गीत' ओ 'निस्तार गीत' देल गेल अछि किन्तु एहि नाम पर प्रदत्त गीतमे पात्रक परिचय नहि अछि, अपितु ओकर मनोभाव वा संकेतक वर्णन अछि । एक ठाम मात्र 'बृद्धा प्रवेश गीत' कहि कऽ देल गीतमे बृद्धाक रूप-स्वभावादिक विवरणमात्र वर्णन अछि । एहिना पात्र-निष्क्रमणक सूचना 'निस्तार गीत' कहि कऽ देल गेल अछि ।

कथोपकथनमे गद्यक प्रयोग नहि अछि । जतक गीत अछि ते कविक उक्ति थिक तथा ओकर विषयक उल्लेख कयल गेल अछि । किछु गीतमे केवल उक्ति-सूचना मात्र अछि, यथा—सकलुक्त गीत, कृष्णोक्ति गीत, राधोक्ति गीत, बृद्धाक कोनूक गीत, गोप्युक्त गीत, स्त्री उक्ति गीत, स्त्री विरह गीत, कृष्ण गोप्योक्तिप्रत्युक्ति गीत । किछु गीतमे उक्ति-सूचना नहि अछि केवल विषय-सूचना अछि देल गेल अछि, कविक उक्ति थिक ते पूर्वपर प्रसंगसँ निर्धारणीय अछि ।

नेपालक नाटकमे ओ जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटकक अन्तमे संस्कृतमे भारत-वाचक प्रयोगक संग देव-देवी वन्दना, साध्विगीत, गुरांग प्रायश्चित्त गान, शारङ्गी गीत इत्यादि रहैछ । 'कुञ्जविहार' नाटकमे भरतवाक्य नहि अछि, किन्तु शक्तिरस गीत, देवी विजय गीत ओ आरती गीतक प्रयोग अवश्य भेल अछि । पञ्चम एकर गान के करैछ ते वरुण्ड अछि । जगज्ज्योतिर्मल्लक 'मुदित कुवलयधर नाटक' चारि अंकमे विभाजित अछि । परन्तु 'कुञ्जविहार'मे एहन कोनो विभाजन नहि अछि ।

कुञ्जविहार नाटक

एकहत्तर

गीत मात्रक प्रयोग होइतो एकरा नाटक कहल गेल अछि । अवश्ये ई गीत सब कथा अन्तर्गत अनुवाचक कथनक खासि व्यवस्थित अछि । अतः एकरा 'गीति नाट्य' कहल जा सकैत अछि । ह्यर अनुमान अछि जे 'कुञ्जविहार' नाटकक उल्लेख प्रती तत्पर्वतः नाटकक प्रथम वा द्वितीय प्राकाशिक । 'पोखण नीलम्' ओ 'मुद्रि कुन्दावर नाटक' क सेहो एहन प्राकाशक अछि । संयोग बल उपर्युक्त दुहु कृतिक नाट्य का सेहो उल्लेख अछि परन्तु 'कुञ्जविहार'क एहन दोतर प्रति उल्लेख नहि भऽ सकल अछि ।

भाषाक दृष्टिसे नाटक विमुख मैथिलीमे अछि । गीत सब ककर उचित थिक जका ओकर विषय-संकेत अवश्ये संक्षुप्तमे देल गेल अछि । शीतक भावमे तत्सम शब्दक प्रधानता अछि । तत्पश्चात् वा बर्तमान पद ओ शब्दक कम अछि । किछु स्थान पर प्राकृत वा अवहट्ट कक प्रयोग देखल जाइछ, यथा-रअणि < रजनी, सेंडासी < सज्जासी < संवासी, कटमलि < कृतमासी । नक्षत्र-पुष्पक सम्प्रत्य कारक कइ दुइ स्थल पर कयल 'नुनार' ओ 'तेरे' सामान्य प्रयोग 'तीहर' ओ 'दोरसे' मिल अछि । किछु शब्द पर नेवारी अविक प्रभाव सेहो अछि, यथा-शून (शूर), कभिन (कठिन), युजल (युजल), लखे (रखे), नेर (गेल) इत्यादि । ई सब नेवारी लिपिकारक प्रभाव कऽ गेल अछि । कारण अप्पन लोक पाठ्यतरमे एकर-मुळ रूप भेटैत अछि ।

गीत सबमे रागक निर्देश अतिवार्ध स्पष्ट अछि । केवल दस गीतमे बीनो राग-निर्देश नहि अछि । निर्दिष्ट राग सब थिक-असावरी, कानरा, केदार, कोराव, देशाव, अनाथी, तट, पहडिया, पंचम, चरावि(ली), जेलावरी, भोम-पलाही, भुगल, भार, मल्लारि, मालव, राजविजय, यमल, श्री ओ सारङ्गी । कोको-कोनो गीतक भणितक चरणमे सेहो राग निर्देश कऽ देल गेल अछि ।

किछु लघुगीतके ओहि सर्वल भणितक प्रयोग भेल अछि । भणितमे कवि 'नृजगजोतिषक' 'रूपति जगजोतिषक' 'नृप जगजोति' अथवा 'जगजोति नरेस'क प्रयोग कयल अछि ।

एहि नाटकक अंगीरस शृंगार अछि एवं हास्यवि अन्व रस अन्व रूपमे आयल अछि । राधा-कृष्णक प्रेम लीलाक वर्णन करितो, अन्व देव-देवीक प्रति श्रद्धास्थित रहितो कवि शिखर छथि तकर प्रमाण न्हि नाटकमे देखल जाइछ ।

नाटकक कथा वस्तु कहियत अछि । कहदाक पाही जे ओनो कथानक नहि अनितु ओकर आभास नात अछि । अत्यन्त सूक्ष्म काल्पनिक कथावस्तुक माध्यमे राधा-कृष्ण-विलासक वर्णन कयल गेल अछि । राधा एवं अन्व गोपी लोकविक कृष्णक संग अद्भुत प्रेम, मंग, विरह, मिलन आदिक चित्रण कयल गेल अछि ।

बहन्ति

जगज्जोतिर्भल कृत

कृष्णक कुञ्जविहार-सञ्जा देखि गोपी सब हसित होइत छथि । कुञ्ज-विहारक स्थान धृन्दावनक यमुना-तीर पर अछि । नील-सुरमित (नील, तन्दल मुवत तमरण एवं मधुकर-ध्वनि-दुरित वातावरण । उबहु श्रुत वास्थित । कृष्ण कहैत छथि—आइ एहि बनमे ई (पञ्चहु) विराजित अछि । जे एहन समयमे अद्भुत संग भेटल ते कामना पूर्ण हो । कारण, सम्मिल यमुना कऽ कामदेव विन-राति पुन रहल छथि । ई कहि कृष्ण राधाक वस्त्र ओथि बँध छथिन । राधा माथ सुजा लैत छथि । पुनः राधा उल्लसक स्वरमे कृष्णक रति-व्यापारक वर्णन करैत यमुना प्रवर्त्तन करैत छथिन । ओर पुछैत छथिन जे हाथमे वेणु ओ अमृत धामन मान मुनि कोन नानिनीक माग रहि सकैछ । ताहि पर अद्भुत आश्रित कथासमे सेव कामदेवक आवाज एहन, जेना चाओ पर गीत छोटल हो ! हे कृष्ण ! मनमे विचारक, अवलोकै मारि कोन सल पायव ?

कृष्ण बोधना करैत छथि जे यमुनाके विनयक कऽ यमुनापुर वाधव । ओर राधाक लग आवि तबारीसि कैलि-कीतुक करव । तखन राधा ओ अन्व गोपीतण दु गीतमे अन्व विरह व्यक्त करैत छथि । एकरा बाद वृत्ता प्रवेश करैत जकर रूप ओ स्वभावदिक वर्णन कयल गेल अछि । ओ दूहि अछि । डाँड सुकल छैक । केन उज्जर छैक । केतनी सब बात छैक । दू अछि संकुचित छैक । बरीसँ स्तन मूलि गेलैक अछि । बुझिया अछि तँ बहोर मुदा कोणल बड़ जनैत अछि । दूती-कार्यमे अधिक चलुरा अछि । एकक स्त्रीके दोतर पुष्पसँ मिलबैत अछि । कुलटा वयल बिल्ला पर कुङ्कुमी बनि जाइछ ।

राधा पुनः प्रवेश कऽ कहैत छथि—हम भयुरा जा कऽ कृष्णके देखब अगिला गीतमे राधाक विरहोक्ति अछि जे-प्रथम वर्णनमे यमन-वृक्षके तहि चीन्हि गेलहु । पाछाँ ओकर सौरभ अनुभूत भेल । ओकर गुण-स्मरण कऽ हृष्य पीडित अछि । सूर्यके देखि जेना सरस्विक विकसित होइछ तहिना प्रेम बढि रहल अछि । मनमे होइछ जे हुनका लग भल जाइ । परन्तु स्वर्प-संकुल पथ देखि भय होइछ । कारण विधाताक ई कृप्य जे मुजसँ अमिलन थो कुजबक संग भेटैछ ।

दूती-प्रवेश कऽ कहैत जे कृष्णके हम राधाक निकट अनगमि । ओ कृष्णक लग जाय राधाक विरहक वर्णन करैछ । किन्तु कृष्ण राधाक सन्निध प्रति बाकुष्ट भऽ ओकर अधरागत पान करवाक हठ करैत छथि । 'छैल मुनुहुन केनहि वन होथ' । से दूती रूप राधाक संगी कृष्णक वादक वशीभूत भऽ पावछ ।

ओ दूती अत्यन्त रूपमे राधाक निकट अवेछ । राधा ओकर अस्त-व्यस्तताक कारण पुछै छथिन-समि किएक ते थपल होइत छ ? सखी-बखीसँ अहोक लग अयलहुँ ते । राधा-अवरतान्ति दूसर किएक छ ? सखी बहुत-प्रकारे

जगज्जविहार नाटक

तेहत्तरि

कृष्णको बात कहल । राधा-अलक-तिलक मेठा गेलह ? तखी-तुनका देर पकड़लियनि
ते' भेटा गेल । राधा-वस्त्रक बदला-बदली किएक ? सबो-अहंका प्रतीति हेतु ।
राधा सब पुति जाइत छथि आ कहैत छथिन—हे बुधियारि ! भाष नहि करह ।

कृष्ण पुनः कुञ्जमे प्रवेश करैत कहैत छथि—आइ राधाको देखल । हृदयक
अमुकध छोटल नहि होइछ । आइ मनक सब आकांक्षा पूर्ण होइत ।

कसनि राधा कहैत छथि जे संसारमे सब जनेस अछि जे मोक्षनिक समाप्त
अहितकर दोसर किछु नहि होइछ । ओकरा नित्य मधुर भरतु दी तथारि ओ
कट्ट मानीछ । सर्ववशक बोधधि भऽ सकैछ मुदा ओकर नहि । अखन अपने
मियतमे अहितकर होथि तँ धैर्य नहि रहि जाइछ । राधा तेसर भीतमे कृष्णक
कृप्य (दूरीक रंग रतिकीड़ा)क भासना करैत छथि । कृष्णक संगहि समस्त
पुरुष जातिक भिन्ना करैत छथि । कुण्डो तारी वर्षक घोर गिन्या करैत छथि ।
राधा बहुत शब्दमे एकर उत्तर दैत छथि । कृष्ण पुनः वसिष्ठान् व्यक्ति
परिषय दैत छथि । ओही समयमे वृद्धा अवन काम-आपारक वर्णन करैत ।
फेर 'उपहार' गीत' द्वारा ओकर शिक्षाकारक वर्णन कयल जाइछ ।
एहि ठाम ई स्पष्ट नहि अछि जेई गीत ककर उक्ति छिक । इहो स्पष्ट नहि होइछ
जे बुधिया अथिजे किएक अछि तथा एकरासँ कोन नाट्य-प्रयोजन सिद्ध होइछ ।
अतः । तदुपरि भोपी सब कृष्णक आचरणक गिन्या करैत । एकरा आगि नाट्य-
निर्देश अछि-कृष्ण गोपबोधि-प्रसूत गीत तथा एकहि गीतमे गोपी-कृष्णक
उत्तर-प्रत्युत्तर उक्ति अछि । एहि ठाम राधाक उल्लेख नहि कऽ गोपीक उल्लेख
कयल गेल अछि । शान्त-भंग भेला पर गोपी (ताहिमे राधा सेहो होथीह) एवं
कृष्ण मिलनक स्थितिमे आवि जाइत छथि ।

कथा भाग एतहि समाप्त भऽ जाइछ । एकर वाचक गीतमे परम्पराक
निर्वाह कयल गेल अछि जाहिमे तीन गीत वर्णित गीत, एक गीत देवी-विरक्ति
गीत तथा अन्तमे आरती गीत देल गेल अछि । एहि पाँचो गीतक मुख्य कथासँ
कोनो सम्बन्ध नहि छैक । एहिमे सांसारिक माया-मोहसँ प्रसन्न मनुष्यक विमर्श,
संसारक विस्मयता, भगवद्भक्तिक महत्व आधिक वर्णन कयल गेल अछि ।

गीतक दृष्टिसँ अवश्ये एहि नाटकमे उत्कृष्टता अछि । चिरत-वर्णन,
शान्त-जीवन, ओकर स्वभाव, ओकर अनुभव इत्यादि वर्णनमे कवि स्वाभाविक
विकलाक आश्रय लेल अछि जाहिमे एकटा अभिनय काव्यास्वादक सृष्टि होइत
अछि । सब मिला कऽ कुञ्जविहार नाटक नैमिषी साहित्यक एकटा महत्त्व
पूर्ण कृति छिक तथा मेवाकमे रचित मैथिली नाटकक एक प्रकारक रूपमे एकर
गणना कयल जा सकैत अछि ।

चौहत्तर

जगज्योतिर्मय कृत

कुञ्जविहार नाटक

॥ ॐ नमस्तस्मै ॥

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ परदेवतायै नमः ॥ साक्षरणाईतारीश्वर नृत्यानाम्
स्वस्वभ्यो नमः ॥ श्रीकुञ्जविहार नाटकं विवर्धते ॥

प्रथमं जगदी गीतं ॥ राजविजय ॥ अति ॥

अनख मुखक जणि तिमिहु नमने, जत खमिमत देख पाचहु यदने ॥
बराभस गूल हाथ हमर अजावे, ताहि गिव परसादे सबे मुख पावे ॥
गजानन पडानन सुत डहु सकै, मङ्गलदायक रूप जेछ वडरज्जे ॥
चाँद गाऊ तनु तिनु प्रबल प्रसासे, नृप जगजोति मन मुख पद आसे ॥१॥

॥ सुतधार प्रवेश गीतं ॥ मालव ॥ अस्तादा ॥

विभूति धूपन भव मणिमय हारे, चरन चलन शिर सुरतरि धारे ॥
तिलक अनिखकर गरल अहारे, नदन नदन हुर संसारक सारे ॥
त्रिभूल हमर कर बसह पयाने, तुम्हार सख शिष केवो नहि जाने ॥
कहे नृप जगजोति सुन सजि जावे, राग मालव रावद इहो अठाले ॥२॥

॥ सुत विस्मय गीतं ॥ आसवरी ॥ प्र ॥

कुञ्जविहार हरि छाजरे,
गोपी तवे हरचित आचरे ॥३॥

॥ राधाकृष्णयोरसंसार प्रवेश ॥ वसन्त ॥ ए ॥

जाहि वह अमुना तीर, सीतल गुरहि समीर ॥
नव दले सबर छोह, मधुर कुनि सब मोह ॥
ताहि विरिवावन भास, हमर हृदय गुणे बास ॥
ताहा कए करि किलास, जसो पतु पुरावण बास ॥
नृप जगजोतिमल बाणी, मोर गति एके सजानी ॥४॥

२. गीत पञ्चवाशिका (७)—१. वहन २. संसारक ३. पयाने ४. रह ।

रागोत्प्रेष अछि—भर धन्वरा गीत ॥ मालव ॥ अस्तादा ॥

कुञ्जविहार नाटक

पञ्चहत्त

॥ पदच्छेदवर्णना गीतं ॥^१ पद्विधा ॥ प्र^२ ॥

तमय वसन्त विनिम वन मोह, परिहरि लाज मुनिहु का मोह ॥
छतु करिए बिलास ॥ प्र^३ ॥^१

तप श्रुतु सबहि सुखीवस खीब^४, विरहिणि रञ्जनि दिनहि दिन खीन ॥
आरिमा धरहर सबहि सोहाव, जलधरे धौएल धुरि महि ताव ॥
गरद सोहाखीन ससधर भाव, पाँक पखाजल जल परमावे^५ ॥
हिमश्रुतु जुवती हवया लाव, दिन जके रसिक विरह चटि जाव ॥
मिशिर सबहि मन तपन उछाह, कमलति जत हिमजले देल वाह ॥
नृपजगजोतिमल मने गुणिगाव, छथो^६ श्रुतु रस पुनमत्त जन पाव ॥ प्र^४ ॥
कृष्णोक्ति गीतं ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

सखि आज,

इ वन तेहि विराज, जयो पाव तोहर समाज ॥
साजल धनु धरि काम, अहमिस भम एहि ठाम ॥
एत बोलि विहसि निहारि, पुलकित देह मुरारि ॥
वसन करखि हरि खेल, राधामुख अवगत मेल ॥
नृप जगजोतिमल गाव, हरक चरण मत्त लाव ॥ प्र^५ ॥

राधोक्ति गीतं भूपाली ॥ प्र ॥

असह वेवन सहि न जाए, के विधि रहम कह जपाम ॥
वसन हरै ससरि गेल, तखने कुछ नखे खत देल ॥
लाजे कर बुहु हृदय देल, सर गदगदे वाजि न भेल ॥
इयाम तनु सबे कपडि होए, प्रकृति हुनकि रह न मोष ॥
केलि समसहि लाज न मान, शिव गति नृप जगजोति मान ॥ प्र^६ ॥

कृष्णोक्ति गीतं ॥ नट ॥ ए ॥

कुलबहु तारि का लाज सोहावए केलि अवसर अनुरीत
तोहर वन देखि धरि न होअ मन न करह मान समीत ॥
राधा तेरे चञ्चल लोचन जोरा ॥ प्र^७ ॥
तोहर दास पव मोख बड मानखो न करह हवय मलान ॥
मदन बेबाधि मोर एक शोषम तोहर अखर मनु पान ॥
हम किछु बिहसि निहारह सुन्दरि, परिहरि निवृत्तक पास ॥

५. गीत संग्रह (८१)—१. (अभाव) २. ख ३. एहि श्रुतु ऐसन होअ ॥ प्र^७ ॥
४. जीन ५. परमावे ६. छव ॥

छेहसरि

जगजगोतिमल कृत

कतहु न पाए अभावस रखणी, कुमुदिनि होअ बिलास ॥

नृप जगजोति अपन मति नावए, राधा काहु बिलास

नूतन तारि नागर बुहु कोतुक शिव पए पुरयधि आस ॥ प्र^८ ॥

॥ स्त्री उक्ति गीतं ॥ पद्विधा ॥ ए ॥^१

कर लए जेणु बमिथ सन मान, तखने रहत की मानिनि मान ॥
ताहि उपरे^२ तुख नयन तरङ्ग, धत सरिया जके^३ मार अनङ्ग ॥
अरे कान्हु^४ अरे कान्हु^५ हेरिअ विचारि, की कल पथोवह अवला मारि ॥
नृप जगजोतिमल हरि गुण गाव, तुख पद पंकज सबहि सोहाव ॥ प्र^२ ॥

॥ कृष्ण निस्सार गीतं ॥ प्र ॥

वन एक हमह जाएव मथुरापुर वय बंधु जत विसवासे,
करख सवारिते केलि कुतुहल फिरि बाए राधाशिक पासे ॥ प्र^३ ॥

॥ स्त्री विरह गीतं ॥ कोराव ॥ ख^४ ॥

बत अनुराग लाए गेल दूर, तुमरि तुमरि^१ हिअ हो मोर शूल^२ ॥
चाँद चयन^३ सखि सरल समान, सब तह कथिन^४ कुसुम शर^५ वान ॥
मधुरे मधुरे सरे कोकिल गाव, बिहि मोर बाम मरच पए भाव ॥
कएल कनक सम तल्लिक विचार, प्रेम कसीटि कसि बुखल^६ मथुरार ॥
नृप जगजोति कह मुनहु समानि, आओत बाधभु तुख गुण जानि ॥ प्र^४ ॥

॥ स्त्री विरह गीतं ॥ आसावरी ॥ ए ॥

हरि धुनि हरि मुनि^१ हिअ साज, हरि देखि हरि रस सहए न पार ॥
हरि देखि हरि हरि हरि जे सोंगाव, हरि बैसि हरि मोहि किछु न सोहाव ॥
सरसिजदल हरि जके जिव डोल, हरि सम होअ मोहि हरि वन रोख ॥
हरि भेल हार हरिहि पए बुख^२, हरि सम सोचन किछु न खूख ॥
हरि पदे नृप जगजोतिमल गाव, हरिममनी हरि अनुजहि पाव ॥ प्र^५ ॥

बृद्धा प्रवेश गीतं ॥ सारङ्गो ॥ प्र ॥

कुंवरि दूवरि विरह वेआकुल, दुति काज पर अधिक चहूर ॥
सनसन केस केतकि सन दात, आखि बुहु बुहु लावल कुल गात ॥

९. गीत पञ्चाशिका (६)—१. पुनः कृष्ण स्तुति नचारी ॥ पद्विधा ॥ प्र, ए ॥

२. उपर ३. जकि ४. कान्हु ५. हलिय ॥

११. तत्रैव (२७)—१. सखी प्रति विरहिण्या उक्तिः २. जो ३. मुमरि
४. भूर ५. चयन ६. कठिन ७. सर ८. बुझल ॥

१२. तत्रैव (४०)—१. विरहिण्याः स्त्रिया उक्तिः कूट २. धुनि धुनि ३. बूझ ॥

कुलविहार नाटक

सतहसरि

बुद्धिमा बहिरि कोसल कल ज्ञान, ध्यान तारि मेरावए जान ॥
कुलटा वपस गेले होख कुटनी, नृप जनजोति खिल शगत धनी ॥१३॥

राधा पैसार ॥ धनाधी ॥ ए ॥
जाएव मधुर पुरि कान्हू देखव ताहि
मोरे वस होएत सवे राहि
की देखव जु ॥१४॥

॥ राधोक्ति गीत ॥ आसाधरी ॥ पण्डलजति ॥^१

दरसने न चिन्ह^२ चाम्दन पाछे, अनुमति मोरने ब्रह्मल पाछे ॥
तमु गुण समुल्लि हृदय होख सूर, पैस बाढ जैसे सरसिल सूर ॥
पुनु मन करिज जाइख तमु पाछे, कणि वेडल देखि उपज तरासे ॥
शिव शिव दाखन बिधिक अकाजे, सुजन समिल हो^३ कुजन समाजे ॥
नृप जनजोति कह एहे सब भाव, पुनव^४ पुण्य पए संघटाव ॥१५॥

॥ द्विती पैसार गीत ॥ वराधि ॥ प्र ॥

कामुक चरण भेटि आज,
आनव राहिक समाज ॥१६॥

॥ सव्युक्त गीत ॥ मालव ॥ ख ॥^१

कुसुमे साजल शेज परिहर दूर, तोहे बिनु हृदय होअ तमु सूर ॥
जलन करए तुज दरसन लाई, अविरल नयन मोर^२ बहि जाई ॥
अनुद्यत तोहरे धरण भेषान, लए कुकुम लिह तमु अनुमान ॥
पए पवि पुनु पुनु कह अनुतापे^३, खने हस खने हस करए विधापे^४ ॥
नृप जनजोतिमल ई रस भाष, दुति उकुति दुस आठओ भाष ॥१७॥

कृष्णोक्ति गीत ॥ कानरा ॥ प ॥

अकामिक बिहि मोर देखि एहि (हा)बहि, पाओल निधि परिहरि कजोन जान ॥
उकुति भाव तोर बुझल कियेपिए, तोह सम चातुरि के होएत जान ॥
अनङ्ग तरङ्ग हनह दिख हनरे, मोह धनुक तुज लोचन बाण ॥
ताहि केलाधि आधि मोहि राखह, वैए अघर मधु पीयूष पान ॥
छैल कुतूहले के नहि वश होख, ईस भगति नृप जनजोति जान ॥१८॥

१५. गीतपञ्चाशिका (२०)—१. अन्वयापदेश तनारी ॥ आसाधरी ॥ ए ॥

२. बिह्वल ३. टरासे ४. होख ५. पुनव ६. खर्जति

१७. तर्जव (२३)—१. ब्रह्माधरीधिरहे अष्टाध्यायि कथन ॥ मालव ॥ खर्जति

२. मोर ३. अनुताप ४. विलाप ५. विलाप

अवहतरि

जनजोतिमल कुव

॥ राधोक्ति गीत ॥^१ मालव ॥ प्र ॥

किए नहि धरि होख साखे, द्विती कियहु, तोरिसे, बएलहु तुज पाछे, राधा ॥
अधर धूसर भेल कांति^२, द्विती कियहु, कहल कहनि कत भाति^३, राधा ॥
अलक तिलक गेल दूर, द्विती कियहु, तमु पए पड ते नूर, राधा ॥
वसन केर किए भेल, द्विती कियहु, तुज विसवाति^४ लागि लेल, राधा ॥
नृप जनजोति कह जानि, द्विती^५ कियहु, लाय न करहु सवागि, राधा ॥१६॥

॥ कृष्ण पैसार गीत ॥ वेलाधरी ॥ प्र ॥

आज देखलि मोर^१ राधा, कि कुञ्ज वन,
हृदयक अनुबंध तेजि न हो मोहि पुरत सकल मन साधा ॥२०॥

राधोक्ति गीत ॥^१ धनाधी ॥ प्र ॥

सोतिनि सम नहि जान, जगत अहित सवे जान, सजनी खेर^२
जैसे मधुर दिख नीत, ओ सवे मानए तीत ॥
साव दासल^३ होख सार, ओकरा नहि परकार ॥
पहु होख अपन बहीत, नहि धरज हो^४ भीत ॥
नृप जनजोति एहे जान, राखव दुहक^५ मान ॥२१॥

॥ राधोक्ति गीत^१ ॥ देवाधि ॥ ए ॥

अधमक सङ्ग रङ्ग तोहे छाज, अनुश्रुताओव कजोन परि आज ॥
पुरुष जाति सवे अहा तहा^२ बूल, लखए न पार^३ ककर की भूल ॥
सब धर सुनिज तोहर उपहास, तोह सजो केलि करब कजोन आस ॥
नागर भाव गमार न सुल, थिक पञ्चम की वायस बुझ ॥
नृप जनजोति कह भाव अनेक, से वुझ जकरा हृदय विवेक ॥२२॥

॥ कृष्णोक्ति गीत^१ ॥ कोराव ॥ चो^१ ॥

नारी कीर नीच अनुमरई, कत अवरोधि^२ धिर न रहुई ॥
कपट कोपे^३ धर कुलटा रीति, पुनव दोष कहए जन जीति ॥

१९. गीतसंग्रह (१३७)—१. (अभाव) २. तांत ३. कान्ति ४. भाति ५. तुज विसवास ६. द्विती ७. द्विती

२१. गीत पञ्चाशिका (३१)—१. सपत्न्याः सवती निन्दा २. सर ३. हासिल ४. होख ५. दुहक ६. द्विती

२२. तर्जव (३३)—१. पुरुषहृसे स्त्रिया उचितः ॥ २. तोहे ३. जाहा ताहा ४. पर ५. द्विती

इन्द्रविहार नाटक

उनाधी

कतेजो मनाईल^१ अपविम होई, कर परपञ्च हृदय घर गोई ॥
 सुख अपवेधि देखि परिणामा, समुचितमान धएल विधि नामा ॥
 नृप जगजोति वचन किछु मुनु, टटल हार मांथिल पुनु पुनू^२ ॥२३॥

॥ राधोक्ति गीत ॥ मल्लरि ॥ प्र ॥

चातर चक्रमक चिर नहि रहई, कुपुण्य पैम विवस बुद्ध बहई ॥
 हुनकर दोस धरह की मोई, सहजक कुटिल सोस नहि होई ॥ध्रुव॥
 बौसक उलिया जल जवो^३ घरई, जतनहु राखिअ अक्षत पए शरई ॥
 काचक टार काम नहि पवई, बबतर भांगि जोर नहि जवई ॥
 तल्लि के आल जोयन^४ मोर घटई, लाम के सोने मूलो धन परई ॥
 ए सखि तल्लिक नाम नहि लेवई, मुनितहि हृदय परामय पवई ॥
 नृप जगजोति अपन मति भनई, विषटल पैम सुदिन सँघटवई ॥२४॥

॥ कुण्डोक्ति गीत ॥ धनाश्री ॥ ए ॥

आकरे आकरे^१ होअ कत हीर, भाति भाति^२ उपजए कत चौर ॥
 नागर नारि रुखमर^३ फूल, तुरगे तुरगे बड अन्तर भूल ॥
 गजहि गएरहि^४ बहुत विषेप, ओहि मतिमन्त विचारीए^५ देख ॥
 अजुअ वुझए ओहि सकल समान, जतनहु सिद्ध (न)^६ सिद्धउसे पयाण ॥
 नृप जगजोतिमल कएल विचार, सिनि विधि विधि निरमाओल सँहार ॥२५॥

॥ बृद्धाक कौतुक गीत ॥ भीम पञ्चाशी ॥ ए ॥

बाहुन वनिआ आओर कत जाति रे, दश पाण्थे खेपथो सगरिए राति रे ॥
 मुखे दुखे कोपे भेख धरजोगि सँडाही, मोहि सजो केलि कर कटमालि तपसो ॥
 बिन हुई चारि बेले पाछ पचताओ रे, धनक कारणे पुनु वह दिस घाथो रे ॥
 अमल ओधन धन सदे मन मागि रे, हमर सज्जे सैह कर कत भाथो रे ॥
 मोजे बड रसिया हूहे सब जान रे, कौतुके नृप जगजोतिमल मान रे ॥२६॥

॥ उपहास्य गीत ॥ श्री ॥ चो ॥

सारस गमनि दिघर तुअ गात, बकुल धार केतकि सन दात ॥
 सुन्दरिया रे ॥

२३. तन्त्रेय (२४)—१. सिद्धया उपहासे पुरजोवितः ॥ २. चोक ३. अक्षरोधिपः
 ४. कपटकोप ५. मनाइल ६. मांथिल पुनु ।

२४. तन्त्रेय (२५)—१. प्रतिपुरषोपहासेन स्थिया उवितः ॥ मल्लरि ॥ २.
 अओ ३. अक्षि पीभन ।

२५. गीत संग्रह (७५)—१. (अभाव) २. आकरे आकरे ३. भाति भाति
 ४. रुख अश ५. गएरहि ६. विचारीए ७. सिद्ध न ।

बुद्धर गयन देखि भौह गेल भांगि, बनचर आग जैसन बुधि कांगि ॥
 जन रोव खन हन कहु कत भांगि, बिहुर क्षरिप गेर कोहुअ भांगि ॥
 एहन रमनि देखि के नहि भूल, पुश्प समाज जलए तत घुर ॥
 कथ अनुवार नृप जगजोति गाव, शिव परवाद परिहास भुसाव ॥२७॥

॥ गोप्युक्त गीत ॥ पालव ॥ ए ॥

अकरा नहि थिक जाज, तहि सजो करव की काज, रे छिया ॥
 अपने बोलि नहि मानी, प्रकृति मोहर भल ज्ञानी, रे छिया ॥
 आजुक सिधेइ कासि नाही, किछु न होखए निरवाही, रे छिया ॥
 कुजन वचन बिषवासे, जीव लेख दए आसे, रे छिया ॥
 कहु नृप आनगबोति, तेहि जने त्रिभुवन जीति, रे छिया ॥२८॥

कृष्ण नोप्योक्ति प्रत्युक्ति गीत ॥ केदार ॥ प्र ॥

परितत भेल सोर भाग, तोहर चरण मन लाग ॥
 तोहि मोर हृदयक हार, सकल संसारक सार ॥
 मोजो अति अजुअ गोआरि, आवे जनु तेजह मुरारि ॥
 तोह फास होख छड़ाए, जेन बाइल कहीं जाए ॥
 नृप जगजोतिमल माग, हर छाडि गति नहि जान ॥२९॥

॥ शान्ति रस गीत ॥ वराली ॥ ए ॥

ममता मोह^१ निवारि, देहक तय विचारि ॥ रे मय सर ॥
 जजो मुकपम अवधान, अह निशि^२ धरए धैरान ॥
 ताहि ते उतरिब पार, विषम जलधि संसार ॥
 नृप जगजोति एही गाव, अवहु तेजहु जडभाव ॥ ॥३०॥

॥ शान्ति रस गीत ॥ आसावरी ॥ प्र ॥

कायिनि रस बस ककरो बोन, काहुक मधुर मनोहर नील ॥
 ए शिव ए शिव थिक जंजाल, अनुषन जीव नरासए काल ॥ध्रुव॥
 कतहु छाडि काहु किछु न सोहाव, कानहि कान कहिन काहुभाव ॥
 छडे-वले-कले केओ धने पए साव, माया बन्ध करओ के बाध ॥
 देखि संसार^३ पसार असार, हूमे जानल हर पद पए सार ॥
 नृप जगजोति भन हमे निरदीन, करहु उधार भवानी ईश ॥ ३१॥

३०. गीत पञ्चवारिका (१२)—१. बुजेंन क्षरिप कथनान्तरं योग प्रकार मन्त्रारी
 ॥ वराली ॥ ए ॥ २. नेह ३. निशि ।

३१. गीत संग्रह (७७)—१. (अभाव) २. बंधनर ३. संसार ।

॥ आरति रस गीत ॥ बराली ॥ श्री ॥

अवुसक आगे जे गुन गाव, अपन पराक्रम^१ अपने लाव ॥
विनु बुलले पुनु सोर^२ डोलाव, कामे मुनए मन वह (विण)^३ लाव ॥
ओधि^४ तगर छन ओधि न मूल, गुणि जन परिसम किछुओ न मूल ॥
बहिहा के जरी कहिअ संदेश^५, हृदय सेवन हो बचन कलेश ॥
कहु विचारि जगजोति नरेत^६, बाहि विवेक ताहि दिख उपदेश ॥३२॥

॥ देवी विजयि गीत ॥ पंचम ॥ सू^१ ॥

कधुकैटभ महिषासुर मारत इन्द्र आदि देव तब^१ जेकरे,
धूम्रलोचन जमधरहि पठाओल अष्टभुज रक्तबीज सह रे^२ ॥
समरे भवति ह्रासे नैरि जिव गेल मुरमुनि मने^३ हरेख भेला ॥
सबे दिक्पाल अपन पद^४ धापल तबक विवाद खनहि दूर गेला ॥
ताहि उपर गुम्भ मिशुम्भ^५ बिडारल चौदिस जय जय किमर गावे^६ ॥
जहा जहा संकट देखि उधरि लेह नृप जगजोतिमल भगतिहि लावे ॥३३॥

॥ आरति गीत ॥ साठ ॥ ए ॥

पवन आनि अवकथित कए कहु सरिर पाप मय जारी,
पिउय आनि पुनु ताहि जिआए कहु लह(म)से देव निखारी ॥
हे मन ए विधि आरति लाव,
काम क्रोध लोभ मोह महारिपु जे विधि दुरहि पराए ॥ ध्रुवं ॥
अमित अतल जल भूमि बकासहि पुनु उपजाइअ देह,
पर शिव पद पर परम जोति लय^१ ताहि सखी राखिअ देह ॥
जरा मरण जमराज पराभव चित्तहु इ तय उवाच,
न रह अज्ञान महातम आरति तेजहि मज्जन पाव,
माया पास पतार देखि कहु दिने दिने उपजु तरास,
गुरु गम बुझि नृपति जगजोतिमल शिवक भगति पए आस ॥ नृप ॥

॥ इति कृञ्जविहार नाम नाटकं संपूर्णम् ॥

३२. तत्रैव (७६)—१. (अभाव) २. पराभव ३. सील ४. हहविश ५. ओधि
६. सन्देश ७. नरेश ।]

३३. गानाराय गीतसंग्रह (४५)—१. अभाव २. नैरवी ॥ प्र ॥ ३. मुनि
४. जकरे ५. हरे ६. मुने ७. अपने पदे ८. धूम्र तिम्र ९. किमर गावे ।